



अखिल भारत
हिन्दू महासभा का मुखपत्र

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

वर्ष- 41 अंक-35

सम्पादक

दिनांक 22 नवम्बर से 28 नवम्बर 2017 तक

वार्षिक शुल्क 150 रुपये

कल्पादि संवत् 1972949117

मुन्ना कुमार शर्मा

मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्थी से मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी 2074 तक

पृष्ठ संख्या 12

उकसावे की
राजनीति

पृष्ठ- 3

हार्ट को
बाईपास....

पृष्ठ- 4

पंचगव्य का
व्यापक.

पृष्ठ- 5

इतिहास स्वयं
को....

पृष्ठ- 9

मूल लक्ष्यों
में असफल...

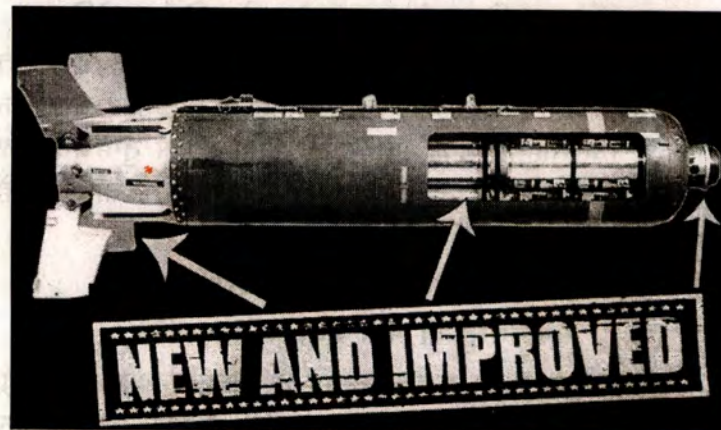
पृष्ठ- 12

- अब मौन क्यों है दीपावली पर साजिश रचने वाले
- जर्मनी में मुस्लिम छात्रों के खुलेआम नमाज पढ़ने पर प्रतिबन्ध
- परिभाषित हों अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक
- अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

भारतीय सेना की बढ़ेगी ताकत हिन्दू महासभा ने दी बधाई

● संवाददाता ●

ओडिशा के चांदीपुर में पूर्ण रूप से देश में विकसित और कम वजन वाले ग्लाइड बम का सफलतापूर्वक परीक्षण किया गया है। इस बम स्मार्ट एंटी एयरफील्ड वेपन को परीक्षण के दौरान भारतीय वायु सेना के विमान से गिराया गया। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान जारी कर बताया। यह निर्देशित बम विमान के जरिए छोड़ा गया, यह बम सटीक नेविगेशन प्रणाली से निर्देशित हो रहा था। सटीकता के साथ बम ७० किलो मीटर के रेंज से आगे पहुंच गया। बयान में कहा गया कि इस दौरान कुल मिला कर **शेष पृष्ठ 11 पर**



रामजन्मभूमि पर शीघ्र मंदिर बनाने के लिये हिन्दू महासभा नेताओं ने की श्री श्री रविशंकर के साथ वार्ता, बैठक में निर्मोही अखाड़ा के महंत उपस्थित

● संवाददाता ●



बंगलुरु। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री चन्द्र प्रकाश कौशिक एवं राष्ट्रीय महामंत्री श्री मुन्ना कुमार शर्मा, ने अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संत एवं आर्ट आफ लिविंग के संस्थापक श्री श्री रविशंकर से भेंट की तथा अयोध्या के रामजन्मभूमि पर भव्य मंदिर शीघ्र बनवाने हेतु उनके द्वारा की जा रही मध्यस्थता का समर्थन किया। बंगलुरु स्थित आर्ट आफ लिविंग के मुख्यालय में हुई बैठक में हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री ने श्री श्री रविशंकर से कहा कि भगवान राम के जन्मस्थान पर मंदिर का निर्माण शीघ्र हो। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा कि लुटेरा एवं विदेशी आक्रांता बाबर के नाम पर मस्जिद का निर्माण हिन्दू महासभा स्वीकार नहीं करेगी। हिन्दू महासभा नेताओं ने श्री श्री रविशंकर से कहा कि रामजन्मभूमि आंदोलन की शुरुआत हिन्दू महासभा ने की थी। इसलिये मंदिर निर्माण में हिन्दू महासभा की मुख्य भूमिका होगी। हिन्दू महासभा नेताओं ने कहा कि कुछ राजनैतिक पार्टियां वोट बैंक को देखकर **शेष पृष्ठ 10 पर**

हमारे धर्मशास्त्रों में समरसता भाव

अहं ब्रह्मास्मि। — एक ही ब्रह्म तत्त्व मुझ में है।

तत् त्वम असि। — वही तुझ में है।

सर्वम् खलु इदं ब्रह्म। — अतः हम सब एक हैं।

उपनिषदों में समरसता भाव—कठोपनिषद्

एको वशी सर्वभूतान्तरात्मा एकं रूपं बहुधा याः करोति। — एक ही आत्मतत्त्व सब में विराजमान है।

वह एक ही अपनी लीला से बहुत प्रकार के रूप बना देता है।

श्वेताश्वतर उपनिषद्

एष देवो विश्वकर्मा महात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः।

— सारे विश्व को निर्माण करने वाला महात्मा परमेश्वर सबके हृदय में रहते हैं।

दूसरे शब्दों में देह देव का मंदिर है।

ऋग्वेद की प्रार्थना में एकत्व बोध

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वं संजानाना उपासते।।

पग से पग (कदम से कदम) मिलाकर चलो, स्वर से स्वर मिलाकर बोलो, तुम्हारे मनो में समान बोध हो। पूर्वकाल में जैसे देवों ने अपना भाग प्राप्त किया, सम्मिलित बुद्धि से कार्य करने वाले उसी प्रकार अपना अपना अभीष्ट प्राप्त करते हैं।

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्

समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।

इन (मिलकर कार्य करने वालों) का मंत्र समान होता है अर्थात् ये परस्पर मन्त्रणा करके एक निर्णय पर पहुँचते हैं, इनकी सभा एक होती है, चित्तसहित इनका मत समान होता है। मैं तुम्हें मिलकर समान निष्कर्ष पर पहुँचने की प्रेरणा (या परामर्श) देता हूँ, तुम्हें समान भोज्य प्रदान करता हूँ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुहासति।

तुम्हारी भावना या संकल्प समान हों, तुम्हारे हृदय समान हों, तुम्हारा मन समान हो जिससे तुम लोग परस्पर सहकार कर सको।

एकोऽहम् बहुस्याम

एक आदितत्त्व से हम सब की निर्मिति हुई है।

इसी कारण से कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं। कोई श्रेष्ठ नहीं, कोई कनिष्ठ नहीं। समरसता हिन्दू चिंतन की आत्मा है।

श्रीमद् भगवद्गीता में समरसता भाव

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।

इक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः।। ६-२६

भावार्थ : सर्वव्यापी अनंत चेतन में एकीभाव से स्थिति रूप योग से युक्त आत्मावाला तथा सब में समभाव से देखने वाला योगी आत्मा को संपूर्ण भूतों में स्थित और संपूर्ण भूतों को आत्मा में कल्पित देखता है।

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति।। ६-३०

भावार्थ : जो पुरुष संपूर्ण भूतों में सबके आत्म मुझ वासुदेव को ही व्यापक देखता है और संपूर्ण भूतों को मुझ वासुदेव के अंतर्गत देखता है, उसके लिए मैं अदृश्य नहीं होता और वह मेरे लिए अदृश्य नहीं होता। अर्थात् मैं और तू में भेद नहीं करना चाहिए। अपनों में दूसरों को देखना चाहिए।

साप्ताहिक राशिफल

मेष - इस सप्ताह आपके धन, सम्पत्ति, मान, सम्मान आदि में वृद्धि होगी, लेकिन परिवार में आपसी मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। कुछ लोगों को पैरों से सम्बन्धित समस्या हो सकती है। किसी लम्बे समय से बिछड़े हुए व्यक्ति से मुलाकात होगी। रूका धन प्राप्त होगा लेकिन तेजी से खर्च भी हो जायेगा।

वृष - इस सप्ताह साझे व सहयोग के कार्यों में आपका भाग्य साथ देगा। किसी न किसी रूप से आपको मानसिक तनाव झेलना पड़ेगा। कुछ लोगों को सरकारी मामलों में सावधान रहने की आवश्यकता है। जो लोग पाइल्स रोगी हैं वो अपने आहार पर विशेष ध्यान दें।

मिथुन - इस सप्ताह आय व व्यय के मध्य संतुलन बिगड़ेगा सोचेंगे कुछ, होगा कुछ। यदि आप कोई रिस्की काम करने जा रहे हैं, तो इस समय पूरी सावधानी बरतें क्योंकि आपके आर्थिक पक्ष में गिरावट आ सकती है। कार्य व व्यापार में नयी रणनीतियों के तहत विकास होगा।

कर्क - नये व्यापार में कोई रिस्क न उठाये। स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। किसी मित्र या रिश्तेदार के आने से खुशी का माहौल रहेगा। जरूरी कार्यों के प्रति सक्रियता बनाये रखें अन्यथा बाधाएँ उत्पन्न हो सकती है। नवयुवक अपने प्रेम सम्बन्ध में खयाली पुलाव न पकायें तो अच्छा रहेगा।

सिंह - आर्थिक मामलों में उन्नति होगी। थोक के व्यवसायों को रिस्क लेने की आवश्यकता नहीं है। परिवार की दृष्टि से यह समय अच्छा है। किसी अधिकारी के सहयोग से पुराना कार्य पूर्ण होगा। नयी योजनाओं में अत्यधिक निवेश करना लाभकारी रहेगा।

कन्या - व्यापार में प्रगति होगी लेकिन अचानक किसी वजह से विवाद होने की आशंका नजर आ रही है। परिवारिक सुखों के लिए यह समय श्रेष्ठ साबित होगा। नौकरी पेशा वालों को पदोन्नति के योग बन रहे हैं।

तुला - यह सप्ताह कैरियर की दृष्टि से अच्छा रहेगा। स्वभाव नकारात्मक रहेगा जिससे सन्तान सुख में बाधा आयेगी। मातृपक्ष को शारीरिक कष्ट हो सकता है। जो लोग कर्ज ब्याज आदि का कार्य करते हैं, उन्हें भी सावधान रहने की जरूरत है अन्यथा दोहरी समस्याएँ खड़ी हो सकती है।

वृश्चिक - नौकरी में विरोधी आपको परेशान करेंगे जिससे मानसिक पीड़ा बनी रहेगी। जो लोग दूरसंचार कम्पनियों में हैं, उनके स्थानान्तरण होने की सम्भावना है। कुछ लोगों को घर-मकान व वाहन आदि के योग बन रहे हैं। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे।

धनु - सप्तम भाव का सूर्य जीवन के गहरे अंधेरे में प्रकाश की एक किरण का काम करेगा। अचानक यात्राओं का योग भी बन सकता है किन्तु सूझबूझ से निर्णय लेने की आवश्यकता है। सुविधाजनक वस्तुओं की खरीदारी करने के सुअवसर प्राप्त होंगे।

मकर - रोजी व रोजगार की तलाश में नवयुवकों को अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। अनचाहे सम्बंधों के प्रति उदासीनता ही उचित समाधान है। व्यवसायी वर्ग अपने सामान की स्वयं देखभाल करें अन्यथा चोरी होने की आशंका है।

कुम्भ - इस सप्ताह अपने लोगों के द्वारा सताये जाने की आशंका है। यदि कहीं पर विवाद में फंसे हुए हैं तो बाहर निकलने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी।

मीन - साझेदारी के कार्यों में लाभ होगा। आठवें स्थान पर शनि होने से अचानक कार्यों में अड़चने उत्पन्न हो सकती हैं एवं वाहन आदि चलाते समय विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है। लाभकारी योजनाओं के प्रति मन लालायित रहेगा।

पं० दीनानाथ तिवारी

श्रीमद्भगवत गीता

अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।

भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च।।

वह परमात्मा विभागरहित एक रूप से आकाश के सदृश परिपूर्ण होने पर भी चराचर सम्पूर्ण भूतों में विभक्त—सा स्थित प्रतीत होता है, तथा वह जाननेयोग्य परमात्मा विष्णुरूप से भूतों को धारण—पोषण करने वाला और रुद्ररूप से संहार करने वाला तथा ब्रह्मारूप से सबको उत्पन्न करने वाला है।।१६।।

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।

ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।।

वह परब्रह्म ज्योतियों का भी ज्योति एवं माया से अत्यन्त परे कहा जाता है। वह परमात्मा बोधस्वरूप, जानने के योग्य एवं तत्त्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है और सबके हृदय में विशेषरूप से स्थित है।।१७।।

इति क्षत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।

मदभक्त एतद्विज्ञाय मदभावायोपपद्यते।।

इस प्रकार क्षेत्र तथा ज्ञान और जानने योग्य परमात्मा का स्वरूप संक्षेप से कहा गया। मेरा भक्त इसको तत्त्व से जानकर मेरे स्वरूप को प्राप्त होता है।।१८।।

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्वयनादि उभावपि।

विकारांश्च गुणांश्चैव विद्वि प्रकृतिसम्भवान्।।

प्रकृति और पुरुष— इन दोनों को ही तू अनादि जान और राग—द्वेषादि विकारों को तथा त्रिगुणात्मक सम्पर्ण पदार्थों को भी प्रकृति से ही उत्पन्न जान।।१९।।

अध्यक्षीय

उकसावे की राजनीति



अमरीका एक बार फिर गोलीबारी का शिकार हुआ है। टेक्सास प्रांत के सदरलैंड स्प्रिंग्स के विलसन काउंटी इलाके के एक चर्च में प्रार्थना कर रहे लोगों पर एक शख्स ने ताबड़तोड़ गोलियां बरसानी शुरू कर दी, जिसमें 26 लोगों की मौत हो गई और कई घायल हुए हैं। बीते एक सप्ताह में अमरीका तीसरी बार हमले का शिकार हुआ है। यह और बात है कि हिंसा और आतंक को धर्म की नजर से देखने वाला अमरीका हर हमले को आतंकी हमला नहीं मानता है। नवंबर की शुरुआत में न्यूयार्क में एक ट्रक ड्राइवर ने पैदल चल रहे लोगों पर ट्रक चढ़ा दिया था। जिसमें आठ लोग मारे गए थे। इसे आतंकी हमला कहा गया था और राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बाहर से आने वाले लोगों के प्रति और सख्ती बरतने की चेतावनी दी थी। लेकिन कोई गोरी चमड़ी वाला अमरीकी नागरिक अपनी सनक में कई मासूम जानें ले लेता है, तो वह अमरीकी सरकार की नजर में केवल दुखद घटना होती है, आतंकी घटना नहीं। याद करें कुछ समय पहले लास वेगास के संगीत कार्यक्रम में हुई गोलीबारी को अमरीका ने आतंकी हमला नहीं कहा, केवल गोलीबारी की घटना कहा। टेक्सास की इस घटना पर भी अमरीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने

राष्ट्रीय उद्बोधन
चन्द्र प्रकाश कौशिक
राष्ट्रीय अध्यक्ष

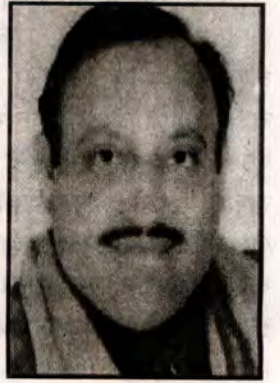
मृतकों के करते हुए, सहयोग देने है। लेकिन घटनाओं को बरतने जैसा जताया।

उनकी सारी सख्ती गैरधर्मी, गैरवर्णी लोगों के लिए ही नजर आती है। दक्षिणपंथ की जो राजनीति डोनाल्ड ट्रंप कर रहे हैं, उसमें ऐसी सोच ही उनके लिए मुफीद होती होगी। लेकिन आम जनता के लिए यह भस्मासुर की तरह काम कर रही है। उनके पूर्ववर्ती अमरीकी शासकों ने जो गलतियां कीं, उसका परिणाम वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमले से लेकर अफगानिस्तान, ईरान, इराक, पाकिस्तान हर जगह देखा जा सकता है। हर नया अमरीकी शासक स्वतंत्रता, उदारता, लोकतंत्र, विश्वशांति की दुहाई देता है, लेकिन हालात अमरीका और उसके साथ-साथ पूरी दुनिया के लिए बद से बदतर हो रहे हैं। उकसावे की यह राजनीति विश्व में बारूद का ढेर बढ़ाती जा रही है और साथ-साथ चिंगारियों का इंतजाम भी कर रही है। अभी ट्रंप एशिया की यात्रा पर हैं और यहां भी उनकी बदजुबानी चालू है। वे उत्तरकोरिया के तानाशाह की सनक का हवाला तो खूब देते हैं, लेकिन उसका शमन करने की जगह उकसाने में ही लगे हुए हैं। उत्तरकोरिया को बार-बार धमकियां दी जाती हैं, बदले में वह भी धमकी देता है, या धमाके करता है। इस खेल में अगर कभी परमाणु हथियारों का उपयोग हो जाएगा, तो उसके परिणाम इन शासकों को नहीं बल्कि आम जनता को भुगतने पड़ेंगे। लेकिन उ० कोरिया और अमरीका दोनों को इसकी परवाह नहीं है। हालात भारत में भी बहुत अच्छे नहीं हैं। यहां चुनावी राजनीति का शोर इतना अधिक है कि गंभीर मुद्दों से जनता का ध्यान हट जाता है। लेकिन पिछले तीन सालों से जम्मू-कश्मीर के जो हालात बिगड़े हैं, वे भी भारत के लिए आत्मघाती साबित हुए हैं। भाजपा जब विपक्ष में थी, तब भी पाकिस्तान के लिए एक सिर के बदले दस सिर वाले अंदाज में बात करती थी। और अब आलम यह है कि कोई दिन नहीं बीतता, जब सीमा पर घुसपैठ या मुठभेड़ न होती हो। तीन सालों में इतने जवान मारे गए, जितने युद्धकाल में नहीं हुए। हर वक्त सेना की ताकत का दंभ भरने और सैनिकों के नाम पर भावनाओं को भुनाने की रीत चल पड़ी है। अगर जवानों की इतनी ही परवाह है तो क्यों नहीं स्थायी शांति की कोशिशें सरकार करती है या आतंकी ताकतों को समाप्त करने की मुहिम चलानी चाहिए। केवल बयान देकर जवानों की सुरक्षा नहीं हो सकती। जो बोये पेड़ बबूल का, तो आम कहां से होए। यह कहावत आज अमरीका पर सटीक बैठ रही है और अगर मोदी सरकार का रवैया भी ऐसा ही रहा, तो भारत भी बबूल के कांटों की पीड़ा सहने को अभिशप्त रहेगा।

E-mail : chandraprakash.kaushik@akhilbharathindumahasabha.org

सम्पादकीय

अब मौन क्यों है दीपावली पर साजिश रचने वाले



हिंदुओं के त्योहार दीपावली पर पटाखों को बैन करने की साजिश करने वाले अब क्या तर्क देना चाहेंगे कि आखिर राजधानी अब गैस का चैंबर क्यों बनी हुयी है। अब तो हिंदुओं को पटाखों के बिना ही दीपावली मनाने को मजबूर किया गया था। प्रदूषण फैलाने वाले अन्य कारणों को खोजने और उस पर रोकथाम लगाने के बजाए सारा दोष दीपावली पर छूटने वाले पटाखों पर ही मढ़ दिया गया था। अब सब मौन क्यों है? साजिशकर्ता सही कारणों को नहीं ढूँढ रहे हैं, जिसके कारण राजधानी व आसपास के लोगों का दमघुट रहा है। दिल्ली में स्मॉग की परेशानी अभी खत्म नहीं होने वाली, आने वाले कुछ दिनों तक आपको इसी गैस चैंबर में घुट-घुट कर जीना पड़ेगा। वायु प्रदूषण आतंकवाद से भी ज्यादा खतरनाक है और इस आतंकवाद को फैलाने वाला कोई और नहीं हमारे देश का सिस्टम और यहां के आम लोग हैं। आपको ये जानकर झटका लग सकता है कि दुनिया भर में वायु प्रदूषण से होने वाली आधी से ज्यादा मौतें सिर्फ चीन और भारत में ही होती हैं। 2016 की स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर रिपोर्ट के आंकड़ों के मुताबिक वायु प्रदूषण की वजह से समय से पहले होने वाली मौतों के मामले में चीन पहले नंबर पर है और भारत दूसरे नंबर पर है। ये रिपोर्ट कहती है कि वर्ष 2015 में वायु प्रदूषण की वजह से चीन में 99 लाख से ज्यादा लोग मारे गए, करीब 90 लाख 60 प्रदूषण वाले आतंकवाद आंकड़ा, पाकिस्तान और से थोड़ा ज्यादा था। यानी दुनिया में वायु प्रदूषण भी मौतें हुई उनमें मारे

राष्ट्रीय आह्वान

मुन्ना कुमार शर्मा

राष्ट्रीय महासचिव

जबकि भारत के हजार लोग वायु का शिकार हुए। ये बांग्लादेश में 9 लाख वर्ष 2015 में पूरी की वजह से जितनी गए 50 फीसदी लोग,

इन्हीं चार देशों के थे। दुनिया के 60 फीसदी लोग ऐसे हैं जो आज भी अशुद्ध हवा में सांस लेते हैं। इंस्टीट्यूट फॉर हेल्थ मेट्रिक्स एंड इवैल्यूएशन के मुताबिक दुनिया में मौत की पांच बड़ी वजहें हैं—जिनमें हाई ब्लड प्रेशर, स्मॉकिंग, हाई ब्लड शुगर और हाई कोलेस्ट्रॉल के अलावा मुख्य वजह वायु प्रदूषण है। इसी संस्था के मुताबिक, भारत में होने वाली मौत की पहली वजह कुपोषण है तो दूसरी सबसे बड़ी वजह वायु प्रदूषण है। यानी आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इस वक्त भारत की स्थिति कितनी गंभीर और चिंताजनक है, हालत ये है कि अगर आप दिल्ली में रहते हैं तो आपका बच्चा पैदा होते ही चेन स्मोकर बन जाता है। ये कोई मजाक नहीं है बल्कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दिल्ली की हवा बहुत खराब हो चुकी है, दिल्ली की हवा में पहली बार सांस लेने वाले बच्चे के लिए ऐसे हालात बन चुके हैं जैसे वो एक दिन में 90 से 92 सिगरेट पी रहा हो। अब आप सोचिए कि इन बच्चों का भविष्य कैसा होगा और इसके लिए कौन जिम्मेदार है। सरकारें सही कारणों को समझने और निराकरण के बारे में सोचना ही नहीं चाह रहे हैं। ऐसा नहीं है कि इन आंकड़ों से हमारी सरकारें और हमारा सिस्टम अनजान है, उन्हें सब कुछ पता है। लेकिन तकलीफ तब होती है जब आम जनता से हाथ जोड़कर वोट देने की अपील करने वाली राजनीतिक पार्टियां और नेता आम लोगों को ही भूल जाते हैं। इसलिए उन पर भरोसा करें भी तो कैसे करें। स्थिति ऐसी हो गई है कि अब आपको अपना ख्याल खुद रखना होगा। चाहे आप बीमार हों या स्वस्थ, आपको स्मॉग की स्थिति में घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए अगर निकलना भी पड़े तो मास्क लगा कर निकलें। आजकल हर मेडिकल स्टोर पर प्रदूषण से बचाने वाले मास्क मिलते हैं। सर्दियों में जहां वायु प्रदूषण ज्यादा रहता है, वहां लोग पानी भी कम पीते हैं। लेकिन ये खतरनाक साबित हो सकता है इसलिए दिन में करीब 8 लीटर पानी जरूर पिएं, प्यास लगने का इंतजार ना करें, थोड़ी-थोड़ी देर में 1 या 2 घूंट पानी पीते रहें। घर से बाहर निकलते वक्त भी पानी पिएं, इससे शरीर में ऑक्सिजन की सप्लाई सही बनी रहेगी और वातावरण में मौजूद जहरीली गैसों अगर खून तक पहुंच भी जाएंगी, तो कम नुकसान पहुंचाएगी। बाहर से आने के बाद गुनगुने पानी से मुंह, आंखें और नाक साफ करें। हो सके तो भाप लें, अस्थमा और दिल के मरीज अपनी दवाएं सही समय पर लें। आपको याद होगा वर्ष 2015 में जब अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बराक ओबामा गणतंत्र दिवस समारोह के लिए भारत आने वाले थे उस वक्त भी दिल्ली की खराब हवा ने अंतरराष्ट्रीय हेडलाइन्स में जगह बना ली थी, क्योंकि उनके आने से पहले अमेरिकी दूतावास ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि दिल्ली की हवा तय मानकों के मुकाबले बहुत ज्यादा प्रदूषित है, इसलिए बराक ओबामा का भारत में खुले वातावरण में नहीं रहना चाहिए और आज जो हालात हैं उन्हें देखते हुए ऐसा लगता है कि भविष्य में दुनिया के किसी भी देश का कोई भी राष्ट्राध्यक्ष भारत आने से पहले 100 बार सोचेगा। इस अशुद्ध हवा का असर भारत की सेहत पर ही नहीं बल्कि इज्जत पर भी पड़ेगा, क्योंकि इस बात की आशंका बढ़ जाएगी कि भविष्य में भारत में कोई अंतरराष्ट्रीय स्तर का खेल आयोजन ना हो या कोई बड़ी कॉन्फ्रेंस या अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन ना हो। अगर ऐसी स्थिति पैदा होती है तो ये एक देश के तौर पर हमारी सबसे बड़ी हार होगी और इसीलिए हम लगातार ये बात कह रहे हैं कि ये एक इमरजेंसी है, जिसकी गंभीरता को समझना चाहिए। और सही कारणों को तलाशना होगा।

E-mail : munna.sharma@akhilbharathindumahasabha.org

जब दिल का रोग लगाना था तब लगाया नहीं, अब क्यों लगा लिया? अब आपको सबसे अधिक जरूरत है जीवन साथी के रुहानी प्रेम की। मुँह न लटकायें क्योंकि यह निराशा का द्योतक है जो आपके मनोबल को कम करेगा। दूसरा साथ चाहिए—ईश्ट देव का प्रेमभाव से पूजा करो। "श्रीमद्भागवत पुराण" खरीद लाओ और उसमें "राम पंचाध्यायी" है उसका चाहे पाठ करो या आराम करते समय पढ़ो। इसे उपचार बताया गया है। अब कुछ घरेलू उपचार पढ़िए—

लौकी (घीया) : इसे धो कर कस लें फिर सिलबट्टे पर पीस लें। पीसते समय ६ पत्ते पुदीना, में ८ पत्ते तुलसी के डाल लें। कपड़े से छान कर १५० ग्राम रस बनायें इसमें इतना ही जल मिला दें। तीन सौ ग्राम में ४ काली मिर्च के बराबर चूर्ण तथा १ ग्राम सेंधा नमक मिला दें। इस रस को नाश्ता, भोजन, रात्रि भोजन के ३० मिनट बाद १००.१०० मि. ली. लें। प्रारम्भ के ४.५ दिन रस की मात्रा १०० की जगह ६० मि. ली. ले सकते हैं। रस रोज ताजा बनायें एवं ताजा पियें। शुरू में पेट में गड़गड़ाहट हो सकती है, क्योंकि रस के विकार नष्ट होते हैं। यह विधि ५ दिन लगातार करके

हार्ट को बाईपास सर्जरी से बचायें



प्रतिदिन सुबह शाम लेने से हार्ट अटैक से बचा जा सकता है।

लैप : एक तोला काली साबुत उड़द रात को गर्म पानी में भिगो दें। सुबह

२५ दिन का अंतराल (गैप) दें। फिर ५ दिन रस लें। ऐसा कम से कम चार माह करें। नीबू, टमाटर, संतरा, आम, इत्यादि (खट्टी चीजें) न खायें। मांस, मदिरा, धूम्रपान, आदि से हार्टअटैक के रोगियों को बचना चाहिए। इनको कतई नहीं लेना चाहिए। इनका पूर्ण परित्याग करें और एक घन्टा खुली एवं स्वच्छ हवा में घूमें।

रस : एक चम्मच पान का रस, एक चम्मच अदरक का रस, एक चम्मच लहसुन का रस और एक चम्मच शहद मिलाकर सुबह शाम लें एवं डॉक्टर दवाएं भी साथ में लेते रहें। यह रस

उड़द को छिलके सहित सिलबट्टे पर पीस लें। इस पिट्टी को एक तोला शुद्ध गुग्गुल के चूर्ण में मिला दें। अब इस सबको खलबट्टे में डालकर उसमें एक तोला अरण्डी का तेल, गाय के दूध से बना एक तोला मक्खन मिलाकर खरल कर रगड़ें। स्नान कर शरीर ठीक से पोछकर छाती से पेट तक इसका लेप मलें। फिर चार घन्टे आराम जनक स्थिति में रहें। जब लेप सूख जाये तब स्नान कर लें। ऐसा पाँच दिन रोज प्रातः करें फिर एक माह का गैप (अंतराल) देकर पाँच दिन करें। ऐसा तीन चार बार करें।

जैस-जैसे हमारी उम्र बढ़ती जाती है, आँखों के नीचे की वसा ढीली पड़ती जाती है। वह या तो फूल जाती है या फिर से नीचे की तरफ खिसक आती है। इससे आँखों के चारों ओर एक छाया पड़ने लगती है। इसका इलाज अधिकतर चर्म रोग विशेषज्ञ रैस्टाइलीन जैसे हायअल्युरोनिक एसिड से फिलिंग करके करते हैं। इसका असर नौ महीने से लेकर एक साल तक रहता है। डार्क सर्कल्स को प्राकृतिक रूप से भी कम किया जा सकता है। आलू या खीरा पीसकर आँखों पर रखें। बादम के तेल से मालिश करें। समय के साथ-साथ आँखों

डार्क सर्कल्स

के नीचे की त्वचा पतली होने लगती है, जिससे त्वचा के नीचे मौजूद लाल-बैंगनी खून की नलियाँ नजर आने लगती हैं। इससे भी आँख चेहरे से अलग नजर आती है। रेटिनॉल युक्त आईक्रीम से कॉलेजन का उत्पादन बढ़ने लगता है और त्वचा मोटी होती है। इससे खून की नलियाँ कम दिखाई देती हैं। लेजर से भी इसका इलाज हो सकता है। आपकी त्वचा का रंग भी डार्क सर्कल्स की वजह बनता है। त्वचा का रंग आपके जीन्स से तय होता है। यदि त्वचा का रंग सांवला है तो आँखों के चारों ओर की त्वचा का रंग कम बदलता है, यानी गोरे होने पर डार्क सर्कल्स ज्यादा होते हैं। हालाँकि लेजर थेरेपी से आप इन्हें हटवा सकती हैं। जब आँखें फूली हुई होती हैं तो सूजन भी एक छाया पैदा करती है, जिससे आँखों के चारों ओर की त्वचा काली लगती है। एलर्जी में डॉक्टर की सलाह से एंटीहिस्टामिन लें। आँखों के चारों ओर की त्वचा पतली होने के कारण सूरज की किरणों का सबसे बुरा प्रभाव पड़ता है। यहाँ की त्वचा के लिए सही संस्क्रिन का चुनाव करें और उसे अच्छी तरह लगाएँ। यदि आप अपनी आँखों के चारों ओर की त्वचा को रगड़ती हैं तो त्वचा की कैपिलरी नष्ट हो जाती है और घाव भी हो सकते हैं। इसलिए अच्छे क्लीजिंग ऑयल का इस्तेमाल करें, जो आँखों के मेकअप को बगैर किसी रगड़ के हटा दे। बहुत-सी महिलाएँ गर्म पानी से चेहरा धोती हैं, इससे आँखें और फूल जाती हैं। ऐसा ही असर हॉट स्टीम का भी पड़ता है। इसलिए चेहरा हमेशा गुनगुने पानी से धोएँ।

सीधे नहीं वजन कम करने के लिए अब दौड़ना होगा 'उल्टा'

फिट रहना किसे पसंद नहीं होता हर कोई यही चाहता है कि वो एकदम फिट दिखे। हमेशा कहा जाता है कि सुबह की ठंडी हवा सेहत के लिए ज्यादा फायदेमंद रहती है और अगर आप इसी समय एक्सरसाइज करेंगे तो ये न केवल आपके मूड को फ्रेश करती है बल्कि फिट रहने का बेहतरीन फॉर्मूला भी है। दौड़ना भी इसी एक्सरसाइज का एक अहम हिस्सा है लेकिन क्या आपको पता है सीधे दौड़ने की बजाय अगर आप उल्टा दौड़ेंगे तो वो ज्यादा असरदार होगा। एक स्टडी में इस बात का खुलासा हुआ। इस स्टडी में २६ महिलाओं को शामिल किया गया जो कि १५ से ४५ मिनट तक रोजाना सीधे की बजाय उल्टी दौड़ लगाती हैं जो कि करीब ६ हफ्ते तक चली। इसमें पाया गया कि ज्यादातर महिलाओं का वजन २.५ फीसदी तक कम हुआ। इसके साथ ही यूनिवर्सिटी ऑफ मिलान और कारडिफ यूनिवर्सिटी के कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि उल्टा दौड़ने से घुटने की इंजरी का खतरा भी कम रहता है। तो चलिए आपको बताते हैं इसके कुछ और फायदे....



सीधे दौड़ने पर आप कमर को झुका भी सकते हैं ऐसा करने पर आपको गर्दन और बैक पेन की समस्याओं से जूझना पड़ सकता है

इसकी बजाय उल्टा दौड़ने पर आपको ज्यादा सीधा खड़ा रहना होता है और इसी Posture maintain भी करना होता है। स्टडी के अनुसार उल्टा भागने से आप जल्दी अपना वजन घटा सकते हैं क्योंकि ये आपकी Calory को २० फीसदी ज्यादा Sburnt करता है। उल्टा भागने में आपको ज्यादा Efeort करना पड़ता है जो कि आपकी शारीरिक क्षमता को बढ़ाता है। सीधे दौड़ने पर आपका दिमाग इधर उधर लगा रहता है क्योंकि आप बोर होने लगते हैं लेकिन उल्टा भागने पर आपको दिमाग उसी में उलझा रहता है इसलिए आपको हर दिन एक्साइटिंग लगता है।

साभार-सत्यचक्र

राजमा के कई फायदे हैं। अगर इसे सही समय पर खाया जाए तो वो आपको अच्छी सेहत दे सकता है। आमतौर पर लोग राजमा रात को खाना पसंद करते हैं, लेकिन एक्सपर्ट के अनुसार इसे अगर दिन में खाया जाए तो ये आपके शरीर को कई फायदे पहुंचा सकता है। क्योंकि इसे पचाना मुश्किल होता है।

❖ राजमा में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स बालों को काला और घना

स्वादिष्ट ही नहीं स्वास्थ्यवर्द्धक

भी होता है राजमा



बनाने में मदद करता है।

❖ इसमें कैल्शियम, मैंगनीज होता है जिससे हड्डियाँ मजबूत होती हैं।

❖ राजमा में फाइबर की मात्रा अधिक होती है जो डाइजेशन इम्प्रूव करने में

मददगार है।

❖ इसमें मैग्नीशियम होता है जिससे दिल की बीमारियों से बचाव होता है।

❖ राजमा में विटामिन K होता है जो नर्वस सिस्टम को बूस्ट करता है। इसे खाने से दिमाग की ताकत बढ़ती है।

❖ इसे खाने से बाडी के टॉक्सिन्स दूर होते हैं और स्किन में निखार आता है।

❖ इसे खाने से ब्लडशूगर लेवल कंट्रोल रहता है और डायबिटीज से बचाव होता है।

विश्वस्त सूत्रों के आंकड़े बताते हैं कि पचास हजार देशी गायों और बैलों का रोज कत्ल हो रहा है। यह चिन्ता का विषय है और इसे रोकना हमारा कर्तव्य है। खाली-पीली यह रट लगाते रहना कि गाय हमारी माता है, जन्म-जन्म का नाता है और शास्त्रों के श्लोकों को उद्धृत कर कि गाय की रक्षा के दायित्व को निभाने के लिए हम हर भरसक प्रयत्न करेंगे, पर्याप्त नहीं है। हर लेखक यह लिखते-लिखते अघाते नहीं है। यह जानते हुए भी कि



इससे कुछ मिलने वाला नहीं है। इस समय ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है, जिससे गाय बचे, उसे उपयुक्त वातावरण व चारा मिले ताकि वह ठीक दूध दे और स्वस्थ होने के कारण उसके पंचगव्य का पूरा लाभ उठाया जाये। उसके गोबर और गोमूत्र से धरती उर्वरा हो, पश्चात् पत्र-पत्रिकाओं में हम यह लिखने योग्य हो जायें कि अमुक गौशाला की पंचगव्य से औषधियाँ और अन्य वस्तुओं के कारण गाय से पालन के खर्च से अधिक आमदनी हुई और ऐसे गौशालाओं के गाय और बैल उपयुक्त वातावरण मिलने के कारण अधिक स्वस्थ रहे।

ठीक पालन-पोषण आवश्यक—गाय हमारी माता है, इस कारण हम उसे पूजते हैं, आशीर्वाद लेते हैं, जिससे देश हर प्रकार से समृद्धि की ओर बढ़ता है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि हम गाय को केवल पूजन का विषय मानकर उसके पालन-पोषण की अवहेलना करें। दुर्भाग्य की बात है कि अधिकतर गौशालाओं में ऐसा ही हो रहा है। गाय को दर्शनीय रखकर उसे उपयुक्त मात्रा में और ठीक पोषण वाला चारा अधिकतर गौशालाओं में नहीं दिया जा रहा। जहाँ यह दिया भी जा रहा है, वह भी गाय के खुले जंगल में चरने इत्यादि

पंचगव्य का व्यापक प्रयोग गाय को बचाएगा

डॉ. मुलखराज विरमानी

व्यवस्था न होने के कारण गाय घुटन महसूस करती है और उसका दूध और अन्य वस्तुएँ इतनी लाभकारी नहीं होती। सबसे पहला कार्य यह होना चाहिए कि गाय को उपयुक्त वातावरण मिले और

तभी तो बड़े शहरों में बड़े-बड़े अस्पतालों में किसानों और उनकी सन्तानों के रोग निवारण के लिए लाया जाता है। ऐसी परिस्थिति में गाय सम्बन्धी संस्थाएँ और गोप्रेमी उद्योगपति एक साथ बैठें और गाय को बचाने के उपायों को निर्धारित करें, भरसक प्रयत्नों द्वारा गाय को बचाने के उपयुक्त साधन निर्धारित करें। गाय सम्बन्धी स्वयंसेवी संस्थाएँ और हमारे महान संत उद्योगपतियों को प्रेरित करें कि वे किसानों से गौशालाओं से और अपनी बनाई गोपालन सदनों से पंचगव्य से वह हर वस्तुएँ बनाये जो स्वास्थ्यवर्धक हों। जब तक उद्योगपति इस ओर ध्यान नहीं देते, गोउत्पाद के फुटकर साधनों से गाय की महान उपयोगिता का खुलासा नहीं होगा। हालाँकि पंचगव्य की बहुत सारी वस्तुएँ इस समय छोटे उद्योगपति तो बना रहे हैं और सार्थक लाभ भी उठा रहे हैं। इन साधनों से अधिक कुछ लाख गायों को सुरक्षा मिल रही है और गाय के पंचगव्य का ठीक प्रयोग हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि इन उद्योगों का विस्तार किया जाये और पंचगव्य के हर कण का ठीक व उपयुक्त प्रयोग हो। हमारे संत समाज भी गाय बचाने के साधनों का पूरा प्रयोग कर इस कार्य में

जुट जाएँ तो सफलता अधिक मिलने की संभावनाएँ हैं। जिन संस्थाओं ने पंचगव्य के लाभकारी उपयोग में सफलता पाई है उसमें पथमेड़ा स्थित श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला सबसे अग्रणीय है। कानपुर गोशाला लगाकर सफलता सोसायटी ने भी हर कुशल साधनों का सहारा लेकर स्वयं उद्योग लगाकर सफलता प्राप्त की है और कई छोटे उद्योगपति इसमें आगे नहीं आयेंगे तब तक इसका व्यापक असर नहीं होगा। उद्योगों में बनने वाली

वस्तुएँ जनहित की हों परन्तु समाज में इनके प्रयोग के प्रति चेतना न हो तो ऐसे साधन सफल नहीं होते। हमारे समाज में ऐसी संस्थाएँ हैं जो भारत में बनी वस्तुओं के व्यापक प्रयोग करने के लिए लोगों को प्रोत्साहित करती हैं। इन संस्थाओं को चाहिए कि अपने स्वयंसेवकों के माध्यम से बड़े-बड़े विक्रेताओं के स्टोरों के सामने उपभोक्ताओं को पंचगव्य से बनी वस्तुओं के खरीदने का आहवान करें। इस पूरी प्रक्रिया का प्रयोजन यह है कि गाय के पंचगव्य का सुचारु रूप से पूरा प्रयोग हो, उद्योगपति इसके लिए व्यापक उद्योग लगाएँ और उपभोक्ता इनसे बनी हुई वस्तुओं का व्यापक प्रयोग कर स्वयं लाभ उठाएँ और इस प्रक्रिया से गाय की वस्तुओं का पूर्णतया उपभोग हो तभी तो गाय की ठीक-ठीक सुरक्षा हो सकेगी।

जर्मनी में मुस्लिम छात्रों के खुलेआम नमाज पढ़ने पर प्रतिबन्ध

जर्मनी के एक उच्च विद्यालय ने मुस्लिम छात्रों के खुले आम नमाज पढ़ने, वजू करने और जानमाज (छोटी चटाई या कालीन) के उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है। रिपोर्ट के अनुसार पश्चिमी जर्मनी के वुपरताल स्थित विद्यालय ने फरवरी में अपने स्टाफ को चिट्ठी लिखकर मुसलमान छात्रों द्वारा विद्यालय परिसर में नमाज पढ़ने की सूचना देने के लिए कहा। विद्यालय के प्रवक्ता ने गुरुवार (दो मार्च) को डीपीए न्यूज एजेंसी से कहा विद्यालय के टीचर और छात्र मुस्लिम छात्रों के आचरण के कारण से दबाव अनुभव करते थे। रिपोर्ट के अनुसार विद्यालय प्रवक्ता ने कहा, पिछले कुछ समय से ये साफ दिख रहा था कि मुस्लिम बच्चे दूसरों के सामने ही प्रार्थना कर रहे हैं, बाथरूम में वजू (हाथ-पैर धोना) कर रहे हैं, सबके सामने अपने जानमाज को लपेटते थे, अपने शरीर को एक खास मुद्रा में मोड़ते थे। विद्यालय में इसकी अनुमति नहीं है। नगरपालिका अधिकारियों ने कहा कि विद्यालय को बच्चों को इससे रोकने का अधिकार है। हालाँकि स्थानीय प्रशासन ने कहा है कि वो विद्यालय के निर्णय के साथ है।

जिला बुलन्दशहर से हिन्दू सभा वार्ता का

शुल्क मास अक्टूबर 2017

- | | | |
|----|---|--------|
| 1. | ईशानां एजेन्सीस (एक्सक्लुसिव एल० जी० स्टोर) के० पी० रोड़, बुलन्दशहर-203001 (द्विवर्षीय शुल्क 2017-2019) | 300/- |
| 2. | के० के० (पी० जी०) कॉलेज इटावा-206001 (उ० प्र०) (आजीवन) | 1200/- |
| 3. | महाराजा हरिश्चन्द्र महाविद्यालय फर्रुखाबाद-209625 (उ० प्र०) (आजीवन) | 1200/- |
| 4. | विनोद ऑटोमोबाइल्स, राजे बाबू रोड़, निकट कचहरी, बुलन्दशहर (वार्षिक) | 150/- |
| 5. | मथुरिया किसान इण्टर कॉलेज, ग्राम-भीमपुर डाक०-दानपुर, जिला-बुलन्दशहर 202392 (वार्षिक) | 150/- |
| 6. | रघुवर दयाल प्रभुदयाल गर्ल्स (पी० जी०) कॉलेज, भैरपुर दोराहा जहाँगीराबाद जिला-बुलन्दशहर (वार्षिक) | 150/- |

टोटल 3150/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर

जिला बुलन्दशहर से अखिल भारत हिन्दू महासभा को प्राप्त दान सूची मास अक्टूबर 2017

- | | | |
|----|--|-------|
| 1. | विवेक भटनागर, बुलन्दशहर (एक्सक्लुसिव एल० जी० स्टोर/ शोरूम के उद्घाटन पर दान) | 200/- |
| 2. | रमेश चन्द वैदिक द्वारा वीर सावरकर पुस्तकालय एवं वाचनालय, 18/186, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर-203001 (महर्षि दयानन्द की 134 वीं निर्वाण दिवस की वर्षगांठ पर दान) | 100/- |
| 3. | गौरव बुलन्दशहर की 45वीं वर्षगांठ पर दान | 151/- |
| 4. | भारत भूषण एवं मनीष डंग 18/187, टीचर्स कॉलोनी, बुलन्दशहर (72 वर्षीय पापा जी—सुभाष चन्द डंग—की अरिष्टि पर दान) | 250/- |

टोटल 701/-

इन्द्रदेव गुलाटी, बुलन्दशहर



निसंदेह आज भारत

और इजराइल के सम्बन्धों में परस्पर बढ़ते सहयोग के लिये किये जा रहे समझौते से दोनों ही देशों के लाभ निहित है। इस्लामिक आतंकवाद से सर्वाधिक उत्पीड़ित दोनों राष्ट्रों की अनेक समस्याएँ समान होने पर भी कुछ युद्धकालीन परिस्थितियों को छोड़ कर परस्पर सहयोग न लेना व देने की पिछले ७० वर्षों की त्रुटि को सुधार कर मोदी जी ने संभवतः सार्थक पहल करी है। अब देखना यह है कि अनेक मुस्लिम देशों द्वारा पोषित इस्लामिक आतंकवाद (जिहाद) की विश्वव्यापी मानवीय समस्या का विनाश किस प्रकार होगा? क्या कुछ इस्लामिक देशों द्वारा बनाई गई सेना जिसके मुख्य अधिकारी पाकिस्तानी सेना के पूर्व जनरल राहेल शरीफ को बनाया गया है, के विरुद्ध भारत व इजराइल मिलकर उनके समांतर कोई सैनिक गठबंधन का गठन करके उनकी चुनौती स्वीकार करेंगे? वैसे दोनों देश कट्टरपन और आतंकवाद के विरुद्ध हर संभव सहयोग करने के लिये पूर्णतः वचनबद्ध है। भारत- इजराइल की बढ़ती मित्रता से इस्लामिक देशों के समूह ओ.आई.सी. (ऑर्गेनाइजेशन ऑफ इस्लामिक कंट्रीज) की बैचेनी अवश्य बढ़ेगी और वे अपने महत्वपूर्ण सदस्य पाकिस्तान की चिंताओं से विचलित हो रहे होंगे। क्योंकि सामान्यतः उनको भारतीय हितों की रक्षार्थ आतंकी पाकिस्तान का किसी भी प्रकार का विरोध स्वीकार नहीं? परंतु अब कुछ मुस्लिम राष्ट्र को मोदी जी के प्रयास के कारण संभवतः

पाकिस्तान का प्रत्यक्ष विरोध अवश्य करना चाहिये।

जिस प्रकार से इजराइल के प्रधानमंत्री श्रीमान बेंजामिन नेतन्याहू ने सामान्य प्रोटोकॉल से हटकर अपने पूर्ण मंत्रिमंडल सहित मोदी जी का अपनी धरती पर स्वागत किया है, वह हम भारतवासियों के लिए बहुत गर्व की बात है।

भारत-इजराइल संबंधों को स्वर्ग से जोड़कर देखने वाले इजराइली प्रधानमंत्री ने भारतीय संस्कृति के प्रति अपने भावनात्मक उदगार से सभी भारतवासियों को अभिभूत कर दिया है। जबकि आलोचना करने वाले भारत विरोधी बुद्धिजीवी व भारत की बर्बादी के दुःसाहसी नारे लगाने वाला वर्ग यह अवश्य कह सकता है कि केवल ८५ लाख की जनसंख्या वाला छोटा सा देश जिसका कुल क्षेत्रफल ही २०७७० वर्ग किलोमीटर ही है, के द्वारा ऐसी औपचारिकता का कोई महत्व नहीं समझना चाहिए। इसलिए यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि जिस प्रकार मुंह के अंदर जीभ अपने चारों ओर कटीले दांतों से घिरी रहती है उसी प्रकार इस देश को चारों ओर से कट्टर मुस्लिम शत्रु देशों ने घेर रखा है। फिर भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि इजराइल छोटा अवश्य है परंतु अपने स्वाभिमान और अस्तित्व की रक्षार्थ उसके विराट रूप का संभवतः विश्व में कोई तोड़ नहीं है। अनेक क्षेत्रों में आधुनिक वैज्ञानिक तकनीकियों से दक्ष यह राष्ट्र हमारे अतिरिक्त अन्य देशों को भी युद्ध सामग्रियों सहित ऊर्जा, कृषि, जल संरक्षण आदि क्षेत्रों

की तकनीकी भी निर्यात करता है। लगभग एक सौ वर्ष पुरानी एक ऐतिहासिक घटना भी हमें इजराइल से जोड़ती है। जब २२-२३ सितंबर १९१८ में प्रथम विश्व युद्ध के समय इजराइल

नेता से बातचीत में हुआ था, का भी उल्लेख यहां आवश्यक है, हो सकता है भविष्य में यह कभी उजागर ही न हो पायें और प्रमाणित भी न हो सकें...

दोस्त और दुश्मन की पहचान को रहस्यमय बनाते रहें। मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति के वशीभूत इंदिरा गाँधी ने इजराइल के सबसे बड़े शत्रु फिलिस्तीन

धरती से स्वर्ग तक अटूट संबंध

✎ विनोद कुमार सर्वोदय

के सबसे बड़े बंदरगाह वाला नगर हाइफा की रक्षा में भारत के ४४ सैनिकों का बलिदान हुआ था। इन बलिदानियों की स्मृति में वहां हाइफा शहीद स्मारक बना हुआ है तथा वहां के स्कूलों में इन भारतीय सैनिकों की वीरगाथाओं को भी पढ़ाया जाता है। नई दिल्ली में भी तीन मूर्ति चौक (अब हाइफा चौक) इन्ही सैनिकों की स्मृति में १९२२ में बनाया गया था जहां तीन मूर्तियां जोधपुर, मैसूर व हैदराबाद की सेनाओं की प्रतीक है।

सदियों से अत्याचारों से पीड़ित हो रहे यहूदी धर्म को मानने वाले यहूदियों ने अपने लिये १९४८ में एक अलग राष्ट्र इजराइल की स्थापना करके वास्तव में अपनी कर्मठता का अभूतपूर्व परिचय विश्व को कराया था जो आज भी प्रगति पथ पर तीव्र गति से अग्रसर है। यह कहना भी सार्वधिक उचित है कि भारत ने सदियों से पीड़ित यहूदी समाज को अपने यहां ससम्मान शरण देकर बसाया और उनको भारतीय समाज का एक अभिन्न अंग बनाने में सम्पूर्ण सहयोग किया। परिणाम स्वरूप अनेक यहूदी भारत राष्ट्र की अभूतपूर्व सेवा करके भारत के प्रति अपनी विराट सद्दयता का परिचय देते आ रहे हैं। इसी संदर्भ में कुछ अलिखित पंक्तियां जिसका ज्ञान मुझे कुछ वर्ष पूर्व एक वरिष्ठ राष्ट्रवादी

... '१९७१ के भारत-पाक युद्ध में जब हमारी सेनायें ढाका की ओर बढ़ रही थी तब रुस व अमरीका आदि के दबाव में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने जनरल मानेकशा को उन्हें रोकने के लिए कहा और जनरल मानेकशा ने तत्काल उस क्षेत्र के कमांडर इन चीफ ले. जनरल जैकब को फोन करा परंतु किसी कारणवश फोन अनसुना रहा.. और इस प्रकार हमने ढाका पर ऐतिहासिक विजय प्राप्त कर ली। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है और इस युद्ध के समय पूर्वी पाकिस्तान (अब बंगलादेश) को पाकिस्तान के अत्याचारों से मुक्त कराने वाले भारतीय सेना के एक यहूदी महानायक ले. जनरल जे.एफ.आर. जैकब को भुलाया नहीं जा सकता। इस जीत का श्रेय जाता तो ले. जनरल जैकब को था परंतु मिल गया जनरल मानेकशा को....अतः इतिहास में ऐसी बहुत सी घटनायें होती रहती हैं जो राष्ट्रभक्तों को नींव का पत्थर बनाती हैं। इसके साथ ही हमें यह नहीं भूलना चाहिये कि १९७१ के युद्ध के समय जब अमरीकी राष्ट्रपति निक्सन भारत विरोध के लिये सक्रिय थे तब इजराइल की तत्कालीन प्रधानमंत्री गोल्डा मायर ने भी भारत को गुप्तरूप से आवश्यक युद्ध सामग्री उपलब्ध करवाई थी।

इस पर भी हम अपने

को सबसे पहले मान्यता दी और उसके फिलिस्तीन मुक्ति संगठन के अध्यक्ष यासिर अराफात को करोड़ों रुपये का नेहरू शांति पुरस्कार १९८० में दिया था। इसके बाद राजीव गाँधी ने भी अपने कार्यकाल में उसको इंदिरा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय शांति पुरस्कार दिया था। जब के समाचारों से ज्ञात हुआ था कि राजीव गाँधी ने तो उसको पूरे विश्व में घूमने के लिए एक बोईंग ७४७ विमान भी उपहार में दिया था। मुस्लिम परस्ती भारत के नेताओं में उस समय इतनी अधिक छापी हुई थी कि यासिर अराफात को छींक भी आती थी तब वो भागकर दिल्ली चला आता था और हमारे पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा और राजीव गांधी आदि उसके लिए पलकें बिछाए रहते थे। यह वही यासिर अराफात था जिसकी इजराइल के सर्वविनाश की इच्छा उसके जीवन काल में भी पूरी न हो सकी। अतः आज भारत व इजराइल की अटूट मित्रता को धरती से स्वर्ग तक बनाये रखने व भविष्य में अनेक संभावित योजनाओं की सफलता में और अधिक सौहार्द बनाने के लिए भविष्य में भारत रत्न से स्व. जनरल जे.एफ.आर. जैकब को सम्मानित किया जाय तो इजराइलियों के साथ साथ भारत का राष्ट्रवादी समाज भी रोमांचित होकर झूम उठेगा।

अल्पसंख्यकों के लिए पाँच नए केन्द्रिय विश्वविद्यालय खोलने की घोषणा हुई है। प्रश्न उठ सकता है कि कौन से अल्पसंख्यक? क्योंकि भारतीय संविधान की धारा 26 अल्पसंख्यक के संदर्भ में धर्म, नस्ल, जाति और भाषा—ये चार आधार देती है। हमारे शासक कहते रहते हैं कि मेरी सरकार किसी भी धार्मिक समूह, चाहे वह बहुसंख्यक समुदाय से जुड़ा हो या अल्पसंख्यक से, को दूसरों के खिलाफ खुले या छिपे तौर पर घृणा फैलाने की अनुमति नहीं देगी, लेकिन इसका पालन तब तक हो ही नहीं सकता जब तक कानूनी रूप से स्पष्ट न किया जाए कि बहुसंख्यक कौन है? किस आधार पर और कहा है? स्पष्ट है कि जब तक बहुसंख्यक को साफ-साफ परिभाषित न करें तब तक ऐसी सदृष्टाओं पर अमल असंभव है। सामुदायिक घृणा की खुली और छिपी अभिव्यक्ति की पहचान करने में निष्पक्षता जरूरी है। ऐसा करने वाले को दंडित करने में कोताही न हो, चाहे वह किसी भी समुदाय का और कैसी भी हैसियत का हो। यदि शासन ऐसा करने में विफल रहे तो लोगों में प्रतिक्रिया होगी। विशेषकर इस कारण कि अल्पसंख्यक का एक सीमित अर्थ करके उसके लिए विविध विशेषाधिकार, सुविधाएँ, संस्थान

आदि बना-बनाकर दशकों से घातक राजनीति हो रही है। दूसरी ओर गैर-अल्पसंख्यक को कानूनी रूप से कोई नाम व पहचान भी नहीं दी गई है। देश हित में यह जरूरी है कि किसी समुदाय को, मनमाने तरीके न अपनाने दिए जाएँ। इसके लिए वह संवैधानिक-कानूनी विषमता दूर करना जरूरी है जिससे स्वतंत्र भारत में बहुत बड़ा अन्याय स्थापित हो गया है। यह अन्याय अल्पसंख्यक

कार्य किस सिद्धान्त पर किए गए? सभी मामलों में अल्पसंख्यक का अर्थ केवल मजहबी, वह भी केवल एक समुदाय किया गया है। इस प्रकार, अल्पसंख्यक का विशेष अर्थ बना देना और फिर मनमाने निर्णय करना देश और समाज के हित में नहीं, पर अल्पसंख्यक के लिए यह सब करने का चलन इतना नियमित हो गया है कि उसे सहज समझा जाता है। यह देश के लिए विघटनकारी है। अल्पसंख्यकों का



परिभाषित हों अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक एक सुझाव सामुदायिक भेदभाव की राजनीति को खत्म करने के उपाय पर

शंकर शरण

और बहुसंख्यक की परिभाषा, विकृति तथा पक्षपात से संबंधित है। इससे 'कानून के समक्ष समानता' का संवैधानिक सिद्धान्त धीरे-धीरे बिल्कुल बेकार होकर रह गया है।

किसी अल्पसंख्यक नेता की आपत्ति पर किसी लेखक के भारत आने पर प्रतिबंध लगा देना, अल्पसंख्यक-केन्द्रित क्षेत्रों में विशेष शिक्षण संस्थान खोलना, चयन समितियों में अल्पसंख्यक प्रतिनिधि को स्थान देना आदि

अर्थ एक विशेष समुदाय मात्र संविधान में कहीं नहीं है, लेकिन व्यवहार में यही हो गया है। यह अभूतपूर्व स्थिति है किसी देश में अल्पसंख्यक को वे अधिकार मिलें जो शेष नागरिकों को न मिले हों। पश्चिमी लोकतंत्रों से 'माइनॉरिटी प्रोटेक्शन' का अर्थ मात्र यह है कि किसी के अल्पसंख्यक होने के कारण उसे ऐसे अधिकार से वंचित न रहना पड़े, जो अन्य सबको है, मगर भारत में उसी अवधारणा का अनर्थ कर दिया गया है। सच

तो यह है कि भारत में 'माइनॉरिटी' वाली अवधारणा की जरूरत ही नहीं थी। ब्रिटिश भारत में भी गोरे अंग्रेजों यानी लघुत्तम अल्पसंख्यक को ही विशिष्ट अधिकार हासिल थे। उससे पहले वंचित समुदाय तो बहुसंख्यक हिन्दू ही थे जिन्हें मुगलकाल में जजिया देना पड़ता था और जिन्हें रामनवमी, दशहरा के जुलूस निकालने की मनाही थी। ऐसी कोई वंचना मुस्लिम समुदाय को नहीं थी।

भारत में अल्पसंख्यक संरक्षण की अवधारणा मतिहीन होकर अपना ली गई, जिसका कोई संदर्भ यहाँ न था। इसे पश्चिम से लिया गया वहाँ इसका अर्थ कतई नहीं कि अल्पसंख्यक को ऐसे विशेषाधिकार दें जो शेष लोगों को न मिले हों। यह गैर अल्पसंख्यक के विरुद्ध दोहरा अन्याय है। क्या कोई भारतीय सरकार इसे बंद नहीं करेगी? सबसे विचित्र गड़बड़ी यह है कि संविधान या कानून में बहुसंख्यक का कहीं उल्लेख नहीं किया गया है। इससे उसका कानूनी तौर पर अस्तित्व ही नहीं है। जब लिखित कानूनी धाराओं पर भारी मतभेद होते हैं, जो न्यायिक निर्णयों में दिखते भी हैं तब किसी लिखित अलिखित धारणा पर क्या होता होगा, यह अनुमान कर लें। इसीलिए यहाँ अल्पसंख्यक के नाम पर भयंकर राजनीतिक खेल और कानूनी पक्षपात चलते रहे हैं। अल्पसंख्यक को दोहरे नागरिक अधिकार मिल गए हैं,

जो सामान्य दृष्टि से भी घोर अन्याय है।

भारत में कोई अल्पसंख्यक के रूप में भी अदालत का दरवाजा खटखटा सकता है। इस प्रकार एक मुस्लिम यहाँ भारतीय नागरिक और अल्पसंख्यक, दोनों रूप में अधिकार रखता है किन्तु एक हिन्दू केवल नागरिक के रूप में। हिन्दू के रूप में वह न्यायालय से कुछ माँग नहीं सकता, क्योंकि संविधान में हिन्दू या बहुसंख्यक जैसी कोई मान्यता ही नहीं है। अल्पसंख्यकों के लिए निरंतर बढ़ते, उग्रतर होते, विशिष्ट संस्थान, सुविधाएँ आदि कार्य घोर अन्यायपूर्ण रहे हैं। यह गैर-अल्पसंख्यकों पर डाकेजनी है, जो इतने खुले रूप में हो रही है कि डाकेजनी नहीं लगती। शरलक होम्स के मुहावरे 'इट इज सो ओवर्ट, इट इज कोवर्ट'। यानी कोई लूट ऐसे दिन-दहाड़े हा रही है कि छिप जाती है। लगता है कि इसमें कोई गलत बात नहीं, तभी तो सबके सामने हो रही है। हमारे संविधान निर्माताओं ने अल्पसंख्यकों को समान अधिकार सुनिश्चित करना चाहा था, कोई विशेषाधिकार देना नहीं चाहा था, लेकिन चूँकि संविधान में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक, दोनों अपरिभाषित रह गये थे इसलिए उसका दुरुपयोग जारी है। यह अन्याय मूलतः सत्ता की जबरदस्ती और आम अज्ञान के कारण होता रहा है। इसमें वोटों का खेल

६० साल के फादर सोपेना को मिली भारत की नागरिकता

छह दशकों से ज्यादा समय तक भारत में रहने के बाद ६० वर्षीय स्पेशिन पादरी गुच्ची फ्रैंडरिक सोपेना को आखिरकार भारतीय नागरिकता मिल गई। नागरिकता प्रमाण पत्र मिलने के मौके पर उन्होंने खुशी से भारत माता की जय का नारा भी लगाया। नागरिकता के लिए उन्होंने ३८ साल तक कोशिश की थी।

फादर सोपेना ने कहा, चर्च के लिए ६८ साल से काम करने के दौरान उन्होंने कई देशों की यात्राएँ कीं वहाँ रहा लेकिन उन्हें कोई भी देश भारत जैसा नहीं लगा। इसलिए उन्होंने भारत में रहने और यहाँ की नागरिकता लेने का फैसला किया। फादर सोपेना सन १९४७ में २२ साल की उम्र में गरीबों के बीच सेवा कार्य के लिए भारत आए थे। वह १५४१ में स्थापित इग्नेशियस लोयला से आए थे। यहाँ रहते हुए उन्होंने ६८ साल तक मुंबई, ठाणे, नासिक और रायगढ़ जिलों के गरीबों के लिए कार्य किए। सन १९६० में एक दुर्घटना में बाई टॉग गंवाने और श्रवण शक्ति कम होने के बाद भी फादर सोपेना की सक्रियता कम नहीं हुई। वह स्कूटर से ग्रामीण इलाकों के दौरे करते और धर्म का प्रचार करते। इस दौरान उन्होंने मुंबई के शिक्षण संस्थान से ग्रेजुएशन भी किया। मुंबई शहरी क्षेत्र के जिला कलेक्टर शेखर चेन्ने ने अपने कार्यालय में गुरुवार शाम नागरिकता से संबंधित दस्तावेज फादर सोपेना को सौंपा।

प्रतिक्रिया

(१) तुष्टीकरण करने वाली कांग्रेस ने उपरोक्त ईसाई पादरी को भारत की नागरिकता नहीं दी। एक पाकिस्तानी मुस्लिम को भी कांग्रेस ने नागरिकता नहीं दी थी।

(२) तीन-चार महीनों में भाजपा ने दोनों को नागरिकता देकर दिखा दिया है कि वह कांग्रेस से ज्यादा तुष्टीकरणवादी है।

(३) यह जानकारी उपरोक्त समाचार में नहीं दी गई है कि फादर सोपेना ६०-७० वर्षों में, गरीबों की सेवा की आड़ में, कितने हिन्दुओं को, ईसाई बनाकर देशद्रोही बना दिया है।

(४) चूँकि अन्य देशों में धर्म परिवर्तन पर पाबंदी है लेकिन भारत में खुली छूट है इसलिए इन्हें भारत पसंद आया।

(५) ईसाई नेता, यदि संयुक्त सरकारों में, शामिल होते हैं तो इनका प्रयास रहता है कि इन्हें गृह मंत्रालय मिले ताकि धर्मान्तरण का कार्य निरन्तर चलता रहे।

(६) खेद के साथ चेतावनी दी जा रही है कि केन्द्रीय गृह राज्य मंत्री किरण रिजीजू पूर्वोत्तर के धर्मान्तरण ईसाई नेता हैं। दुर्भाग्य से यदि मोदी सरकार लम्बे समय तक चलती रही तो पूर्वोत्तर में चौथे ईसाई राज्य बनाने का श्रेय मोदी की भाजपा को मिलेगा। अतः सतर्क और जागरूक रहें। कालीचरण आर्य पूर्व अध्यक्ष आर्य समाज

शेष पृष्ठ 10 पर

(पिछले अंक का शेष)

उल्लेखनीय है कि इस्लाम की स्थापना ६१० ए.डी. के उपरान्त मात्र १४०० वर्षों में ही मुस्लिम जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि के फलस्वरूप विश्व के अनेक गैर-मुस्लिम देश इस्लामी राज्य में तब्दील हो गये हैं। यूरोप व भारत में यह प्रक्रिया आज भी तेजी से चल रही है। जनसंख्या विशेषज्ञों के अनुसार

उनकी किसी कार्यवाही का मूल्यांकन सही ढंग से नहीं कर पाते हैं और उनके मौलिक उद्देश्यों से अनजान रहने के कारण ही अपनी सुरक्षात्मक रणनीति और तदनुसार कार्यवाही की योजना नहीं बना पाते।" (अनवर शेख, 'यहूदी, ईसाइयत और इस्लाम एवं उनकी धर्मान्धता की विभिन्नकार्यें', प्राक्कथन)

भारतीय राजनेताओं ने तो अंग्रेजों को भी पीछे छोड़ दिया, इन्होंने जाति के नाम पर हिन्दू को हिन्दू से लड़ा दिया, जो कार्य अंग्रेज और मुसलमान सुल्तान नहीं कर पाये वो हमारे राजनेताओं ने कर दिखाया।

"यह बड़े दुःख की बात

संसद में वर्ष १८३५ में पेश प्रस्ताव—“भारत की शिक्षा प्रणाली व संस्कृति को नष्ट कर अपने आधीन करने की योजना” को हमारी मीडिया ने बड़ी सुगमता से प्रभावी कर दिखाया। आज विदेशी संस्कृति से प्रभावित होकर हमारा नैतिक व चारित्रिक

किसी अत्याचार के विरुद्ध प्रतिकार हर व्यक्ति और समाज का न्यायसिद्ध अधिकार है। अत्याचार शैतान, मानव या अल्लाह किसी भी नाम से किसी भी रूप में आवे, अत्याचार का मुकाबला हर व्यक्ति का न्यायोचित धर्म है। अन्याय को

इतिहास स्वयं को दोहराता है

प्रो० ए०पी० सारस्वत

है कि हमारे वामपंथी बुद्धिजीवियों ने राजनैतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इतिहास का विकृतीकरण कर इस्लाम के तेजाब जैसे तीखे शासनकाल को पवित्र व समझदारी भरा बना दिया है। सभी शैक्षणिक पाठ्य पुस्तकों एवं संदर्भ पुस्तकों से जिहाद की सारी बर्बरता भरी घटनाओं को निकाल दिया और दबा दिया गया है—मुस्लिम आक्रान्ताओं द्वारा हिन्दू मन्दिरों के विध्वंस को झुठलाने का प्रयास किया गया और बल देकर कहा गया कि मुस्लिम शासक धर्म के मामलों में सहिष्णु थे।" (हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इंडियन पीपुल, खण्ड-VII पृष्ठ १२-१३, बी.वी.बी.)

मैकाले का ब्रिटिश

पतन हो चुका है। नई पीढ़ी की बालाएँ धीरे-धीरे वस्त्र त्याग रही हैं। बलात्कार व अपहरण आम बात हो गई है और देश के संत व मीडिया लोगों को गुमराह कर रहे हैं कि वैदिक संस्कृति सनातन है, मिट नहीं सकती। मोहम्मद गजनी के सोमनाथ मन्दिर पर आक्रमण के समय भी हमारे धर्माचार्यों ने कहा था कि जो भी सोमनाथ की मूर्ति छुएगा, भस्म हो जाएगा, लेकिन भस्म हो रही है—वैदिक संस्कृति।

विगत में की गई भयंकर विनाशकारी भूलों से शिक्षा न लेकर हमारे वर्तमान धर्माचार्य, कथावाचक एवं विभिन्न पंथों के प्रमुखा आदि वही पुराना कर्मकाण्ड एवं गुरुडम बॉट रहे हैं कि बुराइयों व जुल्मों आदि का दमन स्वयं ईश्वर ही करेगा।

सहना अधर्म है।

वैदिक संस्कृति शनैः-शनैः सिमट रही है। क्या भविष्य में हिन्दू धर्म और संस्कृति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा? सोचिये! १२५० वर्ष पूर्व कौन जानता था कि हिन्दुस्तान 'हिन्दू राष्ट्रों' (ईरान, इराक, अफगानिस्तान, बलूचिस्तान, उजबेकिस्तान, नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका, थाईलैंड, मलेशिया, म्यांमार (ब्रह्मा) सुमात्रा, जावा, बोर्नियो, सिलिबस, इंडोनेशिया आदि) से विमुक्त हो जाएगा? १६४७ से पूर्व कौन सोच सकता था कि इस महाद्वीप में पाकिस्तान और बांग्लादेश नामक दो विशुद्ध मुस्लिम राष्ट्र बनेंगे? निःसंदेह भारत अध्यात्म के क्षेत्र में विश्वगुरु है, जिसका आधार

शेष पृष्ठ 11 पर

सन २०६० तक भारत में हिन्दू अल्पमत में हो जाएंगे। (जोशी आदि—'रिलीजस डेमोग्राफी ऑफ इंडिया', २००३)

इसी आंकलन के आधार पर पाकिस्तानी विद्वान अनवर शेख ने अपनी पुस्तक 'इस्लाम एण्ड टेरेरिज्म' (पृ. १८१) में लिखा है—“२०६० तक भारत में मुसलमानों की संख्या हिन्दुओं से अधिक हो जाएगी और वे बन्दूक की एक गोली चलाए बिना ही यहाँ की सरकार पर कब्जा कर लेंगे।” (डॉ. के.वी. पालीवाल, भारत इस्लामी राज्य की ओर—एक चेतावनी)

“इसके विपरीत भारत में उपजा धर्म सनातन वैदिक धर्म है, जिसमें सम्पूर्ण मानवता के कल्याण की कामना है, 'जियो और जीने दो' की भावना है, तर्क और विवेक की प्रधानता है, जबकि सैमेटिक परम्परा (ईसाई, इस्लाम व यहूदी) में हत्या, लूट, अपहरण, बलात्कार, गुलामी द्वारा दूसरे समुदाय को कुचल कर अपने आधीन करने व शोषण करने की रही है। इस परम्परा में यही उनकी नैतिकता है। सनातन वैदिक परम्परा के पंथ—सम्प्रदाय वाले भारत के लोग सैमेटिक परम्परा की मूल भावना से सदा अपरिचित रहते हैं और नैतिक मूल्यों वाली अपनी पारम्परिक दृष्टि से सैमेटिक मजहबों को भी देखने के कारण

हिन्दू आज जातियों के अलावा राजनैतिक पार्टियों में विभाजित हो गया है, जो उसके पतन का ही नहीं विनाश का भी कारण है। हिन्दुओं को जातियों व राजनैतिक पार्टियों से ऊपर उठकर केवल हिन्दू बनना पड़ेगा, तभी हिन्दुओं का व राष्ट्र का कल्याण हो सकेगा व राजनैतिक पार्टियों की रोटी सिकनी बन्द हो सकेगी, तभी वे हिन्दुओं के हितों के बारे में भी सोच सकेंगे। राजनीतिज्ञों ने तो हिन्दू शब्द को ही सम्प्रदायिक करार दे रखा है तथा हिन्दुओं को अपने ही देश में द्वितीय श्रेणी के नागरिक की स्थिति में ला दिया है।

हमारे धर्मशास्त्रों ने मनुष्य को सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत ४ वर्णों में विभाजित किया था मगर उनमें कोई भेद न था, सब वर्ण पारस्परिक परिवर्तनीय थे। चारों वर्ण एक ही परिवार में कर्मों के आधार पर हो सकते थे। समार्य में विकृति तब प्रारम्भ हुई, जब जाति/वर्ण का निर्धारण कर्म के बजाय जन्म के आधार पर होने लगा और आज हिन्दू ४ वर्णों से ४००० जन्मना जातियों में बंट कर पंगु हो गया है।

अंग्रेजों ने हिन्दू व मुसलमान को आधार बनाकर राज्य किया और जाते-जाते देश का इसी आधार पर बंटवारा भी कर दिया। परंतु

व्रतोत्सव प्रदर्शिका

पौष कृष्णपक्ष

व्रत, पर्व, त्यौहार (उत्सव)	तिथि	वार	दिनांक
❖ इष्टि: स० सि० यो० २७:२० तक	१	सोमवार	०४.१२.२०१७
❖ भद्रा २४:०३ से, पश्चिमास्तशनि: ०८:४७	२	मंगलवार	०५.१२.२०१७
❖ भद्रा १०:१६ तक, चतुर्थी व्रत, चन्द्रोदय २०:२६	३/४	बुधवार	०६.१२.२०१७
❖ ईद-ए-मौलाद, झण्डादिवस,	५	वीरवार	०७.१२.२०१७
❖ अ०सि० योग १६:५३ तक, पंचमीक्षय: भद्रा २६:५१ से, २०:५० १८:२७ से	६	शुक्रवार	०८.१२.२०१७
❖ भद्रा १४:१६ तक, उर्स मेहबूबा, २०:५० १७:४० तक	७	शनिवार	०९.१२.२०१७
❖ कालाष्टमीव्रत अष्टकाश्राद्ध, मानवाधिकार दिवस, स०सि०यो० १७:३४ से	८	रविवार	१०.१२.२०१७
❖ वि०मू० उ०फा०दिवा०, नवमी	९	सोमवार	११.१२.२०१७
❖ भद्रा १३:४६ से २६:०६ तक, श्रीपार्श्वनाथ चन्द्रप्रभु जयन्ती(जैन) पौषीदशमी, श्री संघ	१०	मंगलवार	१२.१२.२०१७
❖ सफला एकादशी व्रत स्मार्त-वैष्णव, बल्लव० बाबा नागपाल पुण्य:	११	बुधवार	१३.१२.२०१७
❖ सफलाद एकादशी व्रत, निम्बार्क	१२	वीरवार	१४.१२.२०१७
❖ प्रदोषव्रत, धनु में सूर्य २७:०१, संक्रान्ति मु० ३०, बड व सौरमास पौषारम्भ, खरमास शुरु, स० पटेल पुण्य: तेजीमंदीसूचकांक २१:२४, स० सि० यो० २५:३० से	१३	शुक्रवार	१५.१२.२०१७
❖ भद्रा ०७:११ से २०:२० तक, शुक्रास्त: पूर्वस्यां २५:१०, १३/१४ मासशिवरात्रिव्रत, (शुक्रास्त)		शनिवार	१६.१२.२०१७
❖ स०सि०यो० ३०:०६ से, चतुर्दशी	१४	रविवार	१७.१२.२०१७
❖ अन्वा: पौषी ३०, देवपितृकार्येऽमा, सोमोती, वकुलामावस पर्वदिन (उड़ीसा), हत्तापनाशन स्नान ब्रह्महत्याशमनार्थ (मद्रास)	३०	सोमवार	१८.१२.२०१७

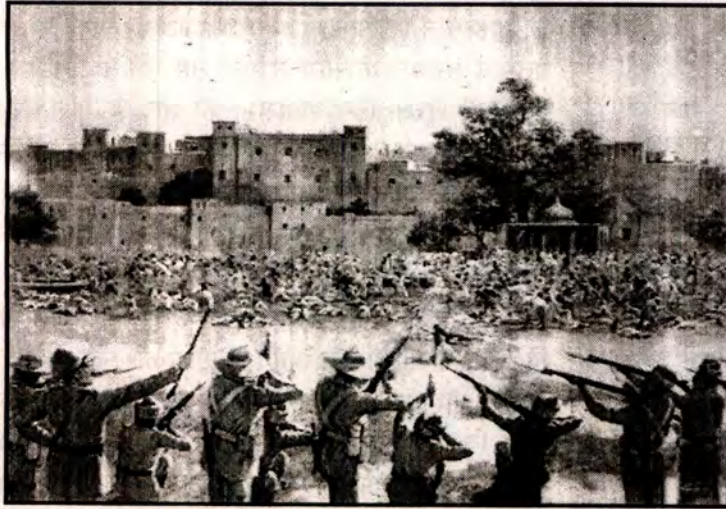
अमृतसर की खूनी बैसाखी से क्षुब्ध हुए अमर शहीदों का बलिदान

✶ रामबिहारी विश्वकर्मा

अंग्रेज हमारे देश में व्यापारी के रूप में आये और भारत की जनता ने 'अतिथि देवो भव' की परम्परा के अनुसार इन व्यापारियों को सब प्रकार की सुविधाएँ दीं। लेकिन धीरे-धीरे इन व्यापारियों ने देश में फूट डालकर उसके टुकड़े-टुकड़े करके अपना कब्जा जमा लिया। १८५७ में भारतीय सिपाही ने पहली बार विद्रोह करके भारत माँ को विदेशी दासता से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया लेकिन वे विफल रहे। महाराष्ट्र में वासुदेव बलवन्त फडके ने १८७३ में युवा समाज का संगठन शुरू किया। जगह-जगह व्यायामशालाएँ खोलीं। इस क्रान्तिकारी को राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास की सजा दी गई लेकिन युवकों ने खासतौर पर गरमपंथी विचारधारा वाले युवकों ने यह निश्चय कर लिया कि इस देश को आजादी भीख माँगने से नहीं मिलेगी। उनका दृढ़ विचार था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम लेकर रहेंगे।

भारत में अंग्रेजों ने तथाकथित शासन सुधार के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन नियुक्त किया था। यह कमीशन ३ फरवरी, १९२८ को जब भारत पहुँचा तो पूरे देश में हड़ताल रखी गई और जगह-जगह "साइमन गो बैक" के नारे लगाये गये। लाहौर में नौजवान भारत सभा के सदस्यों ने भी नारे लगाने की योजना बनाई। तत्कालीन पुलिस अधीक्षक स्काट ने असिस्टेंट सान्डर्स को रास्ता साफ करने की जिम्मेदारी सौंपी। लाहौर में लाला लाजपत राय और नौजवानों की टोली पर सान्डर्स ने लाठी बरसाई। लाला लाजपत राय को इतनी चोट लगी कि कुछ दिनों पश्चात् चोट के कारण उनकी मृत्यु हो गई। भगतसिंह ने इस दुःखद घटना पर प्रस्ताव रखा कि लाला जी पर जो लाठियाँ बरसाई गई हैं उसी के कारण उनकी मृत्यु हुई है। इससे समूचे राष्ट्र का अपमान हुआ है। और नौजवान भारत सभा इस अपमान का बदला लेकर रहेगी। उन्होंने लाठी चलाने वाले पुलिस सुपरिटेण्डेंट स्काट को गोली का निशाना बनाने का निश्चय किया। लाला लाजपत राय की मृत्यु के एक

महीने के बाद चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, राजगुरु और जयगोपाल ने पुलिस स्टेशन के सामने सान्डर्स को गोलियों से भून डाला। वे मारना



तो चाहते थे स्काट को जिसने सान्डर्स को लाठी चार्ज का आदेश दिया था। लेकिन दोनों का आकार-प्रकार ऐसा था कि पहचानने में कुछ भूल हो गई और भ्रमवश उन्होंने सान्डर्स को मार डाला। इस तरह उन्होंने लाला लाजपत राय की मृत्यु का बदला ले लिया। इन जवानों ने भारत माँ की बेड़ियाँ काटने के लिए अपने पैरों में बेड़ियाँ डज़ल ली।

२३ वर्ष की उम्र में भगत सिंह एक युगपुरुष बन गये थे। अपने खून से उन्होंने स्वतंत्रता के जिस पौधे को सींचा वह विशाल वृक्ष बन गया। भगत सिंह को वीरता का यह सबक पुश्तैनी तौर पर प्राप्त हुआ था। एक बार जब वे छोटे थे और छोटे-छोटे तिनके जमीन में गाड़ रहे थे तो उनके पिता सरदार किशन सिंह ने पूछा कि बेटे तुम क्या कर रहे हो तो तुतलाती आवाज में भगत सिंह ने कहा कि यानि बंदूकें बो रहा हूँ। उनका परिवार पिछली दो पीढ़ियों से विदेशी सरकार के खिलाफ संघर्ष कर रहा था। ऐसे परिवार में भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारी विचारों वाले बालक का जन्म लेना स्वाभाविक ही था। भगत सिंह १०-११ साल की उम्र में ही बहुत ही चिन्तनशील हो गये थे। १९१९ में १३ अप्रैल को बैसाखी के दिन अमृतसर के जलियाँवाला बाग में एक सभा में करीब २० हजार स्त्री-पुरुष, बच्चे इकट्ठे हुए थे। इसी बीच लेफ्टिनेंट सर ओडायर ने १०० हिन्दुस्तानी और ४० अंग्रेज सिपाहियों के साथ वहाँ प्रवेश किया। करीब १६ सौ राउण्ड

फायर किये गये, जलियाँवाग बाग में लाशें पट गईं। उस समय भगत सिंह १२ वर्ष के थे। वह पढ़ने गये थे, लेकिन वह दृश्य देखकर उन्होंने

खून से भीगी मिट्टी उठाई और माथे से लगाकर उसे एक छोटी सी शीशी में भर लिया। घर पहुँचने पर अपनी बहन को वह शीशी दिखाई और शीशी के चारों ओर फूल रखकर सिर झुकाया। १४ वर्ष की उम्र में ही उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और स्वतंत्रता के आन्दोलन में कूद पड़े। उनके अन्दर अद्भुत संगठन शक्ति तो थी ही, व्यवहार कुशल भी थे। इसी बीच ५ फरवरी १९२२ को गोरखपुर के चौरी चौरा स्थान पर लोगों की भीड़ ने थानेदार और सिपाहियों को थाने में बंद करके आग लगा दी। क्रान्तिकारियों के मन में यह निश्चय हो गया था कि अंग्रेजों के कान बहरे हो चुके हैं। वे शान्ति की भाषा सुन नहीं पाते। बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों का ध्यान आकर्षित करने के लिए और उनके बहरे कानों में सुनाई देने लायक आवाज बुलन्द करने का निश्चय किया। उन्होंने एसेम्बली में बम फेंकने की योजना बनाई। एसेम्बली में ८ अप्रैल १९२६ को वायसराय के फैसले की घोषणा की जाने वाली थी। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त खाकी कमीज और नेकर पहनकर वहाँ पहुँच गये। उन्होंने अखबार में लिपटा हुआ बम सरकारी बेंचों के पीछे खाली जगह पर फेंक दिया। उसके बाद दूसरा बम भी फेंका। उन्होंने पिस्तौल से गोलियाँ भी छोड़ी। दोनों वहाँ खड़े रहे और नारा लगाया इन्कलाब जिन्दाबाद दूसरा नारा गूँजा साम्राज्यवाद का नाश हो। उन्होंने

एसेम्बली में पर्चे भी फेंके जिस पर अंग्रेजी में लिखा हुआ था, बहरों को सुनाने के लिए ऊँची आवाज की जरूरत होती है। बम फेंकने के बाद भगत सिंह तथा बटुकेश्वर दत्त आसानी से भाग कर बच सकते थे मगर वे शांत चुपचाप खड़े रहे। पुलिस जब उन्हें कोतवाली ले जाने लगी तो उन्होंने फिर नारा लगाया, 'इन्कलाब जिन्दाबाद' दूसरा नारा गूँजा 'साम्राज्यवाद का नाश हो।' भगत सिंह केवल क्रान्तिकारी ही नहीं थे वे अध्ययनशील और दार्शनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। उनसे जब न्यायालय में पूछा गया कि क्रान्ति से आपका आशय क्या है? तो उन्होंने कहा, क्रान्ति से हमारा प्रयोजन है अन्याय पर आधारित वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन। उन्होंने आगे कहा पूँजीपति, शोषक और समाज पर घुन की तरह जीने वाले लोग करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाते हैं वहीं दूसरी ओर शानदार महलों का निर्माण करने वाले गंदी बस्तियों में रहते हैं। ऐसा समाज किस काम का? इसे बदलना होगा। भगत सिंह ने न्यायालय के समक्ष नई सामाजिक व्यवस्था की जो रूपरेखा दी वह बड़े-बड़े दार्शनिकों को भी सोचने के लिए बाध्य करती है कि इतनी कम उम्र में इस व्यक्ति ने गहन चिन्तन-मनन का समय भला कब निकाला होगा?

एसेम्बली में विस्फोट के मूल में उद्देश्य अपने क्रान्तिकारी विचारों को लोगों तक पहुँचाना था। उनके वक्तव्य उस समय के प्रचलित अखबारों में प्रकाशित हुए, उनकी नई विचार पद्धति के साथ जोशीली भाषा और कष्ट झेलने के लिए आगे बढ़ना, यह देखकर सारा देश उनके प्रति आकृष्ट हुआ। उन्होंने कहा था कि हम ये जानते हैं कि पिस्तौल और बम इन्कलाब नहीं लाते। इन्कलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है, हमने बम का धमाका करके यही प्रकट करना चाहा है। हमारे इन्कलाब का अर्थ पूँजीवाद और पूँजीवादी युद्धों के कष्टों को समाप्त करना है। उन्होंने न्यायाधीश के सामने स्पष्ट किया कि अगर बम फेंकने वालों का सही दिमाग न होता तो वे खाली जगहों की बजाय बेंचों पर बम फेंकते, लेकिन उन्होंने सही जगह चुनने की जो हिम्मत दिखाई है, उसके लिए उन्हें ईनाम मिलना चाहिए। १२

जून १९२१ को हुए अरोम्बली बम कांड के मुकदमे में भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास दिया गया। भगत सिंह जेल से ही लक्ष्य को पूरा करने के लिए जनक्रान्ति करते रहे।

लम्बी भूख हड़ताल की। भगतसिंह ने कहा कि हम इस शर्त पर भूख हड़ताल तोड़ेंगे कि हम सबको एक साथ रहने का मौका दिया जाये। जेल अधिकारियों ने उनकी बात मान ली और उन्हें दाल फुल्का दिया गया। उस समय भी उन्होंने अपनी जिद मनवाई। आजादी के इन दीवानों को देखने के लिए देश भर से लोग पेशी के दिन अदालत में जाते थे और वहाँ 'वन्देमातरम्' और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारों से आसमान गूँज उठता था।

लाहौर जेल में ही बटुकेश्वर दत्त, अजय घोष, जितेन्द्र सान्याल, यतीन्द्र नाथ दास भी रखे गये थे। इसी बीच सान्डर्स हत्याकांड का मुकदमा भी १० जुलाई १९२६ से शुरू हुआ। भगत सिंह को हथकड़ी लगाने की जब बात हुई तो उन्होंने कहा कि एक क्रान्तिकारी को पुलिस के सिपाही के साथ हाथ बाँध कर ले जाया जाये ये न्याय के खिलाफ है और उन्होंने भूख हड़ताल कर दी। न्यायाधीश जब कुर्सी पर बैठते थे तो चारों ओर नारे और राष्ट्रीय गीत गूँजने लगता था, "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है। वक्त आने पर बता देंगे तुझे ऐ आसमां। हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।"

जिस समय मृत्यु की भयानक काली छाया मंडरा रही थी, उस समय भी आजादी के इन दीवानों की हँसी और अट्हास गूँजता रहता था। भगत सिंह कई बार ऐसा व्यंग्य छेड़ते थे या कोई ऐसी पेचीदा सवाल उठा देते थे कि मजिस्ट्रेट भी चकरा जाते थे। मुकदमे की कार्यवाही ३ महीने तक चलती रही और दुनिया भर के मुकदमों के इतिहास में शायद लाहौर षडयंत्र केस ही ऐसा है जिसमें फैसला उस दिन सुनाया गया जिस दिन न अभियुक्त अदालत में हाजिर थे, न गवाह और न वकील। अदालत ने खुद आरोप लगाया और खुद ही फैसला दिया। फैसले में भगतसिंह, राजगुरु और

ॐ कहो गर्व से, हम हिन्दू हैं ॐ

प्रतिष्ठा में,

श्री राजनाथ सिंह जी,

माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार

नार्थ ब्लॉक, नई दिल्ली-११०००१

विषय : कश्मीरी आतंकवादियों, उसके संरक्षकों और अलगाववादियों को दी गई कमांडो की सुरक्षा वापस लेने की मांग।

महोदय,

बड़ा विचित्र लगता है जब यह दिखाई पड़ता है कि सैयद अली शाह गिलानी, यासीन मलिक, अब्दुल्ला परिवार आदि आतंकवादी, पत्थरबाज और देश के टुकड़े कराने की घोषणा करने वाले ये लोग देश के कमांडो की सुरक्षा में सीना तानकर घूमते हैं और सारे देश की जनता को ठेंगा दिखाते हैं। यह बताते हैं कि देश भक्ति से ऊँचा स्थान देशद्रोह का है क्योंकि देश भक्त को मारा जा सकता है किन्तु देशद्रोही को नहीं मारा जा सकता और जो कोई भी देश भक्त इनकी तरफ अंगुलि उठाएगा, उसे इन देशद्रोहियों के कमांडो कब जान से मार देंगे पता भी नहीं चलेगा। इस प्रकार देशद्रोही पूरी तरह सुरक्षित हैं और देश भक्त को कभी भी मारा जा सकता है।

दुनियाँ भी आश्चर्य में पड़ी होगी कि हिन्दुस्थान एक ऐसा देश है जहाँ देश को जिहाद की आग में झोंकने वाले, लव जिहाद करके निर्दोष व अनिच्छुक लड़कियों को वेश्यावृत्ति के लिये विवश करने वाले और देश के टुकड़े करने वालों को प्रोत्साहित करने वाले मक्कार देशद्रोही लोग सरकारी कमांडो की सुरक्षा में अपने सब कुकृत्य करते हैं। समझ नहीं आता कि ऐसी कौन-सी विवशता है जिसके कारण घोषित आतंकवादियों और अलगाववादियों को सरकारी सुरक्षा देकर जनता-जनार्दन को उनकी दया पर मरने के लिए छोड़ दिया जाता है? अनुरोध है कि इसकी समीक्षा कर सुरक्षा वापस लेने की कृपा करें और इन अलगाववादियों और देशद्रोहियों को भगवान के भरोसे छोड़ दिया जाए। इस संबंध में की गई कार्रवाई की जानकारी भिजवाने का कष्ट करें।

सादर,

भवदीय

(चन्द्रप्रकाश कौशिक)
राष्ट्रीय अध्यक्ष

(मुन्ना कुमार शर्मा)
राष्ट्रीय महासचिव

(वीरेश त्यागी)
राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री

गौ हत्या स्वीकार्य नहीं, उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद सरकार नया नोटिफिकेशन लाये - हिन्दू महासभा

अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा है कि हिन्दुस्तान में गौहत्या स्वीकार्य नहीं हो सकता है। पशुओं की बिक्री से संबंधित केन्द्र सरकार के नोटिफिकेशन पर रोक लगाने के उच्चतम न्यायालय के निर्णय पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए श्री शर्मा ने कहा कि केन्द्र सरकार पुनः नोटिफिकेशन लाये, ताकि गौहत्या के लिये पशुओं की खरीद-बिक्री नहीं हो सके। श्री शर्मा ने कहा कि केन्द्र सरकार के वकीलों ने सही तरीके से सुप्रीम कोर्ट में तर्क नहीं रखा। इसलिये ऐसा निर्णय आया है। यदि सरकार ठीक से पक्ष रखेगी, तो नोटिफिकेशन पर कोर्ट का रोक नहीं लगेगा। परन्तु उत्तर-पूर्वी राज्यों में चुनावी गणित को देखकर केन्द्र की बीजेपी सरकार ने मुकदमें में ढीलाई की है। इसलिये सरकार फिर से नोटिफिकेशन शीघ्र लाये और आवश्यकता पड़ने पर मुकदमा मजबूती से लड़े। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा ने कहा है कि गाय हमारी माता के समान हैं। गाय में ३३ हजार करोड़ देवी-देवता निवास करते हैं। भारत के १०० करोड़ हिन्दू पूजा करते हैं। गौवंश का दूध, घी, दही, गोबर, मूत्र देशवासियों के लिये अत्यंत ही उपयोगी है। इसलिये गाय को बचाना हमारा कर्तव्य है। श्री शर्मा ने कहा कि देश के लाखों गौरक्षकों के साथ मिलकर अखिल भारत हिन्दू महासभा गौरक्षा के लिये कृतसंकल्प है। देश में गायों की हत्या करने नहीं दी जायेगी।

हिन्दू महासभा ने घोषित किया आगरा नगर निगम का चुनावी एजेण्डा

दिनांक ०३.११.२०१७ को यूथ हास्टल, संजय पैलसे में अखिल भारत हिन्दू महासभा, आगरा के द्वारा प्रेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया। हिन्दू महासभा के प्रदेश अध्यक्ष योगेन्द्र वर्मा तथा प्रदेश महासचिव सौरभ शर्मा ने आगरा के जिलाध्यक्ष सुनील नोहवार द्वारा प्रस्तुत किये गये "निकाय चुनाव का एजेण्डा" अर्थात् आगरा का विकास को विमोचन किया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि ३० प्र० की पूर्ववर्ती सरकारें तुष्टीकरण की राह पर चलती रही इस सरकार से लोगों को बहुत उम्मीदें थी पर पिछले छः माह में न तो अपराध की घटनाओं पर रोक लग सकी और न भ्रष्ट नेताओं पर। जनता वर्तमान सरकार के रवैये से खुश नहीं है। तुष्टीकरण से दूर रहकर राष्ट्रभक्ती का विकास व उनकी सुरक्षा हिन्दू महासभा की सोच है जिस पर हम कायम हैं तथा यहीं सोच जनता को हमारे करीब ला रही है। प्रदेश महासचिव सौरभ शर्मा ने कहा कि शिव मन्दिर की नगरी, आगरा का विक मात्र पर्यटन स्थल नहीं वरन् तीर्थ स्थल की सोच पर होना चाहिये माँ यमुना के दोनों ओर गौचारण क्षेत्र व यहां के तीर्थों को शास्त्रार्थ केन्द्र के रूप में विकसित कराया जाये। विभिन्न विभागों में रिक्त पदों पर शीघ्रता से संविदा व दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों/शिक्षकों को समायोजित किया जाये जिससे नगर निगम, वि० वि० मैडीकल कॉलेज आदि भली प्रकार जनता को सेवा प्रदान कर सकें। जिलाध्यक्ष सुनील नोहवार ने प्रदेश सरकार की गढ़वा मुक्त सड़कों के जुमले पर व्यंग्य करते हुये कहा कि हिन्दू महासभा सड़कों, पीने के पानी, प्राइवेट बिजली कंपनी में भ्रष्टाचार, राशन कार्डों में अनियमितता, ठेले, रिक्शा व टैम्पू चालकों के बच्चों की पढ़ाई व शादी के लिये सरकारी मदद, छोटे व्यापारियों के उत्पीड़न तथा अपराध मुक्त आगरा जैसे ज्वलत जनता से जुड़े, मुद्दों पर चुनाव लड़ रही है। यदि जनता का आशीर्वाद मिला तो हमारे पार्श्व हर वार्ड में चौपाल लगाकर जनता का दर्द जानेंगे व हल करायेंगे। धमेन्द्र शर्मा व जिला उपाध्यक्ष विजय शर्मा ने सभी प्रदेश पदाधिकारियों व्यक्तियों का स्वागत किया है व कार्यकर्ताओं से प्रचार में जुट जाने का समस्त जिला कार्यकारिणी आह्वान किया है। ब्रह्मदत्त शर्मा, दिनेश कुमार नोहवार, सन्दीप शर्मा, राहुल कुशवाह, मनोज अग्रवाल, विनय गुप्ता, अर्जुन माहौर, अन्जु वर्मा पुनीत वार्षणेय, करन रावत, नरेश गोस्वामी, कामता प्रसाद इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

शेष पृष्ठ 7 का परिभाषित हों अल्पसंख्यक.....

जरूर है, पर यह इसलिए संभव हुआ, क्योंकि मूल प्रश्न अनुत्तरित है कि बहुसंख्यक कौन हैं? इस समस्या का सबसे सरल उपाय यह है कि संसद में एक विधेयक लाकर घोषित कर दिया जाए कि संविधान की धारा २५ से ३० में वर्णित अधिकार सभी समुदायों के लिए समान रूप से दिए गए हैं। ऐसी व्यवस्था दे देने से किसी अल्पसंख्यक का कुछ नहीं छिनेगा। केवल दूसरों को भी वह मिल जाएगा, जो उनसे धीरे-धीरे राजनीतिक छल करके छीन लिया गया है। केन्द्र सरकार इस छल के आधार को सदा के लिए खत्म कर दे तो सामुदायिक भेदभाव की राजनीति सदा के लिए खत्म होने का मार्ग खुल जाएगा। अन्यथा संगठित वोट के लाभ में जानते-बूझते सामुदायिक अन्याय बढ़ता जाएगा और उसकी प्रतिक्रिया भी होगी।

शेष पृष्ठ 1 का रामजन्मभूमि पर शीघ्र मंदिर.....

इस मामले को कोर्ट में लटकाये हुए है। यदि आपके द्वारा मध्यस्थ के रूप में प्रयास हो तो इस मामले का समाधान शीघ्र हो सकता है। हिन्दू महासभा ने साफ-साफ कहा कि बातचीत से या न्यायालय द्वारा या संसद में कानून बनाकर मंदिर का निर्माण शीघ्र होना चाहिए।



बैठक में निर्माही अखाड़ा के पंच महंत दिनेन्द्र दास महाराज, हिन्दू महासभा नेता श्री प्रमोद पंडित जोशी, श्री राकेश रंजन आदि उपस्थित थे।

हिन्दुत्व विज्ञान की आध्यात्मिक व्याख्या है

शेष पृष्ठ 1 का भारतीय सेना की बढ़ेगी.....

अलग अलग स्थितियों में तीन परीक्षण हुए और सभी सफल हुए। निर्देशित बम को आरसीआई, डीआरडीओ ने इसके अन्य प्रयोगशालाओं व भारतीय वायु सेना के सहयोग से विकसित किया है। रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमण ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों और वायुसेना को इस सफल परीक्षण के लिए बधाई दी है। रक्षा विभाग के अनुसंधान एवं विकास विभाग के सचिव और डीआरडीओ के चेयरमैन एस क्रिस्टोफर ने बम बनाने वाले दल को बधाई देते हुए कहा है कि एसएएडब्ल्यू को जल्दी ही सशस्त्र सेना में शामिल किया जाएगा। अखिल भारत हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रप्रकाश कौशिक, राष्ट्रीय महासचिव मुन्ना कुमार शर्मा एवं राष्ट्रीय कार्यालय मंत्री वीरेश त्यागी ने डीआरडीओ के वैज्ञानिकों को बधाई दी है।

शेष पृष्ठ 8 का इतिहास स्वयं को दोहराता.....

वेद हैं, मगर वेदों में राष्ट्ररक्षा, राष्ट्रोन्नति एवं विकास को उतना ही महत्त्व दिया गया है, जितना कि अध्यात्म को। आज लोगों ने राष्ट्रधर्म अथवा राजधर्म की उपेक्षा कर दी है और अध्यात्म को कर्मकाण्ड तक सीमित कर दिया है। ईसाई और इस्लाम दोनों ही आक्रामक और साम्राज्यवादी धर्म हैं, जिनके सामने कर्मकाण्ड प्रमुख हिन्दू धर्म टिक न सका। जरूरत है कि हम महाभारत की घोषणा "सर्व धर्मा राजधर्म प्रधानः" को प्रमुखता दें। क्योंकि इस उद्घोष में पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं आध्यात्मिक सभी कर्तव्यों की पूर्ति हो जाती है। (सर्वा विद्या राजधर्मेषु युक्ता। सर्वे लोकाः राजधर्म प्रविष्टाः) अतः आज हिन्दुओं के लिए अनिवार्य है कि अपने देश के इतिहास का पूर्ण ज्ञान रखें और अपने पूर्वजों के भाग्य-दुर्भाग्य से सीख लें, क्योंकि इतिहास की पुनरावृत्ति होती है उन अज्ञानियों के लिए, जो अपने इतिहास से अभीष्ट पाठ नहीं लेते और चेतावनियों को नहीं समझ पाते या समझना नहीं चाहते।

(शेष अगले अंक में)

साप्ताहिक हिन्दू सभा वार्ता

विशेषतायें जो अन्यत्र नहीं मिलतीं

1. पत्रकारिता के उच्च राष्ट्रनिष्ठ मानकों के लिए प्रतिबद्धता
2. राष्ट्र और हिन्दुत्व को हानि पहुँचाने वाले कारकों पर पैनी दृष्टि
3. साम्प्रदायिक और पृथक्तावादी सोच पर जमकर प्रहार
4. राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर पारदर्शी चर्चा
5. सामाजिक सरोकारों की तह तक जाकर समाधानपरक बहस
6. प्रेरक प्रसंग, महान् व्यक्तियों से प्रेरणा लेने का माध्यम
7. भ्रष्टाचार, अपराध और अन्तर्राष्ट्रीय चिंतन पर तीखा आक्रमण

हमारा संकल्प

1. हम एक ऐसी समतामूलक राष्ट्रीय व्यवस्था के पक्षधर हैं जहां निर्धनता का अभिशाप न हो, किसी का शोषण न हो, न्याय वनपशुओं की चेरी न बने, सब समान हों, एक दूसरे के सहयोगी हों।
2. हम एक ऐसी संस्कृतिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जिसमें हिन्दुत्व के सार्वभौमिक और सार्वकालिक सिद्धांतों को प्रतिष्ठित किया जा सके, जिससे कि हिंसा, पाप, शोषण, विषमता और संवेदनहीनता की कालिमा से विश्व को मुक्ति मिले।

केवल इतना ही नहीं, अन्य भी बहुत सी जीवनोपयोगी सामग्री।

आपका साप्ताहिक, आपकी भावनाओं का दर्पण।

-: तत्काल ग्राहक बनें :-

सदस्यता शुल्क

वार्षिक.....	150/- रुपये
द्विवार्षिक.....	300/- रुपये
आजीवन सदस्य.....	1500/- रुपये

ड्राफ्ट या मनीआर्डर

"हिन्दू सभा वार्ता" के नाम भेजें।

पता :- हिन्दू महासभा भवन, मंदिर मार्ग, नई दिल्ली-110001

नोट :- केवल स्थानीय बैंक स्वीकार किये जाते हैं।

शेष पृष्ठ 9 का अमृतसर की खूनी बैसाखी.....

सुखदेव को फाँसी की सजा सुनाई गई, ७ को काले पानी की सजा, एक को सात वर्ष की सजा और एक को तीन वर्ष की सजा दी गई। भगत सिंह को मृत्यु से तनिक भी भय न था, उन्हें न तो व्यक्तिगत चिन्ता थी और न कोई दुःख था।

भगत सिंह जेल में अध्ययन करते रहते थे। हर पत्र में वे पुस्तकों की ही माँग करते थे। पुस्तकों के साथ-साथ वह यहाँ तक लिख देते थे कि पुस्तकालय के रजिस्टर में उस पुस्तक का कितना नम्बर है। उन्होंने चार्ल्स डिकेंस, रीड मेम्सबेनी, गोर्की, मार्क्स, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, जार्ज बर्नार्ड और लेनिन आदि का गहन अध्ययन किया था। जब वे अपनी कोठरी में इधर से उधर घूमते थे तो कभी-कभी पुस्तकें छोड़कर मधुर स्वर में गा उठते थे, "माँ मेरा रंग दे बसन्ती चोला। इसी रंग में रंग के शिवा ने माँ का बंधन खोला।" उन्हें राष्ट्र और राष्ट्रवासियों की इतनी चिन्ता थी कि उसके सामने अपने कष्टों का कुछ ध्यान ही नहीं था, जेल में ही उन्होंने 'आत्मकथा, मौत के दरवाजे पर, समाजवाद का आदर्श और स्वाधीनता की लड़ाई में पंजाब का पहला उभार' जैसी पुस्तकें लिखीं। कुछ पुस्तकें तो छप गईं लेकिन कुछ नहीं छप पाईं। जेल में जब कोई मिलने आता था तो कभी-कभी वह कहते थे अगर मैं इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा देश के कोने-कोने तक पहुँचा सका तो समझूंगा कि मेरे जीवन का मूल्य मिल गया। उन्होंने जेल से युवकों के नाम सन्देश भेजा था जिसमें अपनी राजनीतिक विचारधारा को स्पष्ट किया था। उन्होंने अपने बारे में कहा था, यह बात प्रसिद्ध की गई है कि मैं आतंकवादी हूँ परन्तु मैं आतंकवादी नहीं हूँ, मैं एक क्रान्तिकारी हूँ जिसके कुछ निश्चित विचार-आदर्श और लम्बा कार्यक्रम है मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम बम और पिस्तौल से कोई लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। हमारा मुख्य लक्ष्य यह है कि मजदूरों और किसानों का संगठन हो।" भगत सिंह के बलिदान का क्षण ज्यों-ज्यों नजदीक आ रहा था, वह प्रसन्नता और उत्सुकता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहे थे। अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखे पत्र में उन्होंने कहा था—“फिर जन्म लूँ और मातृभूमि की सेवा कर सकूँ” मृत्यु के प्रति उनकी निर्भीकता को देखकर लगता था कि जैसे वह इंसान नहीं फरिश्ता है। जब उनसे कहा गया कि आखिरी वक्त अपने वाहे गुरु का नाम ले लो और 'गुरुवाणी' का पाठ कर लो तो भगत सिंह ने कहा, "आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ तो वह कहेंगे कि यह बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद नहीं किया और मौत सामने नजर आने लगती है तो मुझे याद करने लगा है। लोग यही कहेंगे कि आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर इसके पाँव लड़खड़ाने लगे।" जब फाँसी की सजा दी गई तो भगत सिंह बीच में थे, अगल-बगल सुखदेव और राजगुरु थे। तीनों मिलकर साथ-साथ गाते हुए चलने लगे, दिल से निकलेगी ना मर कर भी वतन की उल्फत, मेरी मिट्टी से भी खुशबुए वतन आयेगी।

भगत सिंह ने मजिस्ट्रेट को देखकर कहा था 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि आपको देखने को नसीब हो रहा है कि भारत के क्रान्तिकारी किस तरह खुशी-खुशी अपने उच्च आदर्शों के लिए मौत को गले लगाते हैं।' उनके पैरों पर न कंपकंपी थी, न चेहरे पर घबराहट। फाँसी का फंदा पकड़कर उसे घूम कर तीनों ने एक साथ गर्जना की, "इन्कलाब जिन्दाबाद" साम्राज्यवाद मुर्दाबाद। उस समय शाम के सात बजकर 30 मिनट हुए थे। इन तीनों क्रान्तिकारियों को समूचा देश उनकी निर्भीकता और राष्ट्रवाद की अदम्य भावना के लिए सदैव याद रखेगा।

शेष पृष्ठ 12 का शूद्रों को मंत्र दीक्षा देने में.....

के जीवन में राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व का सुन्दर समन्वय था। उनके जीवन की दो प्रमुख धाराएँ थीं एक भारतीय सनातन धर्म परम्परा और दूसरी उनकी उत्कृष्ट राष्ट्रभक्ति। वास्तव में धर्म ही उनका देश था और देश ही उनका धर्म था। वे दो बार कांग्रेस के तथा तीन बार हिन्दू महासभा के प्रधान चुने गये। जब केन्द्रीय विधानसभा में उन्होंने स्वराज्य दल को मुसलमानों के सामने हिन्दू हितों को न्यौछावर करते देखा, तो उन्होंने लाला लाजपत राय से मिलकर हिन्दू हितों की रक्ष के लिए राष्ट्रवादी दल को संगठित किया। साम्प्रदायिक निर्णय (कम्युनल एवार्ड) के संदर्भ में कांग्रेस के रवैया से भी वे बहुत आहत थे। वे मुसलमानों की अनुचित माँगों को मानने के विरुद्ध थे। उन्होंने भारत को राष्ट्रवाद का सिद्धान्त दिया जिसका आधार सांस्कृतिक था। मालवीय जी की राष्ट्रभक्ति दिखावटी नहीं थी। देशभक्ति उनकी रंग-रंग में प्रवाहित थी। वे राष्ट्रीयता और देशभक्ति के मूल तत्त्व को जानते थे। वे स्वार्थ प्रेरित देशभक्ति के प्रबल विरोधी थे। वे देशभक्ति को साधन कर्तव्य ही नहीं वरन् परम धर्म मानते थे। एक बार महात्मा गाँधी जी ने उनकी देशभक्ति से प्रभावित होकर कहा था—'मैं तो मालवीय जी महाराज का पुजारी हूँ। देशभक्ति में उनका मुकाबला कौन कर सकता है। यौवन काल से लेकर वृद्धावस्था तक उनकी देशभक्ति का प्रवाह अविच्छिन्न रहा है।' मालवीय जी धर्म-भक्त, देशभक्त और समाज भक्त होने के साथ महान सुधारक भी थे। उनके बहु आयामी प्रभावशील व्यक्तित्व और देश-समाज को समर्पित उनके कृतित्व ने उनको अमर कर दिया। राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त ने उनके लिए कहा है—'भारत को अभिमान तुम्हारा, तुम भारत के अभिमान। पूज्य पुरोहित थे हम सबके, रहे सदैव समाधानी।'

यह भी सच है

शूद्रों को मंत्र दीक्षा देने में अग्रणी—पं. मदन मोहन मालवीय

डॉ० राकेश अग्रवाल

महामना पं. मदन मोहन मालवीय जी की हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों में अगाध श्रद्धा थी। राष्ट्रवाद उनमें कूट-कूट कर भरा था। जो हिन्दू धर्म की ही देन था। हिन्दू धर्म के सहिष्णुता के गुण के कारण वे अन्य धर्मों का भी समुचित आदर करते थे। प्राणियों के प्रति दया, परोपकार, सदाचार, भगवद्भक्ति, स्त्रियों का सम्मान, अनुशासन, समाज सेवा आदि गुण हिन्दू धर्म के कारण ही उनके जीवन के अंग बन गये थे। उनके ऊपर ये पंक्तियाँ पूरी तरह चरितार्थ होती हैं—‘स्वयं पर गर्व है मुझको कि हिन्दू धर्म पाया है, स्वयं ही भाग्य में मेरे ऐसा सत्कर्म आया है।’ हिन्दू धर्म में जन्म लेने के कारण मालवीय जी में बाल्यकाल से ही प्राणियों के प्रति दया का भाव दृष्टिगोचर होता था। जब उनकी आयु दस-बारह वर्ष की रही होगी, उन्होंने एक घायल कुत्ते को सड़क पर कराहते हुए देखा। कितने ही लोग उसको एक नजर देखते और संवेदना प्रकट करके चले जाते किन्तु बालक मदन मोहन से नहीं रहा गया। वह भागकर डॉक्टर के पास गया और दवा ले आया। उसने कुत्ते के गुराने के बाद भी बिना भय के घाव पर दवा लगा दी। लोग उसको मना भी करते रहे। किन्तु घुट्टी में मिले हिन्दुत्व के विचारों व संस्कारों ने उसे प्राणिमात्र की दया से विरत नहीं होने दिया। ‘यत्र नार्यस्ते पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।’ नारी कहावत के संदर्भ में और घर-परिवार-समाज में नारी के सम्मान के लिए मालवीय जी सदैव संघर्षरत रहते थे। उन्होंने पुरातनवादी हिन्दू होते हुए भी स्त्री-शिक्षा पर बल दिया जबकि उस काल के अन्य पुरातनवादी व्यक्ति स्त्री-शिक्षा का यह कहकर घोर विरोध करते थे कि यदि स्त्रियों को पुरुषों के समान शिक्षा मिलेगी तो समाज में घोर विप्लव आ जाएगा।

मालवीय जी का सम्पूर्ण जीवन शिक्षा के लिए समर्पित था। उन्होंने अपने अथक प्रयासों से हिन्दु विश्वविद्यालय की स्थापना कर शिक्षा का आलोक सर्वत्र फैला दिया। मालवीय जी की इस निस्वार्थ समाज सेवा के लिए ही लीडर समाचार पत्र के तत्कालीन सम्पादक श्री.सी.वाई. चिंतामणि ने मालवीय जी को ‘धर्मात्मा पं. मदन मोहन मालवीय’ कहा। मालवीय जी धर्म के वास्तविक मर्म को समझते थे। धर्म का लक्षण बताते हुए कहते थे—‘यस्तु आर्याः क्रियमाणं प्रशंसन्ति से धर्मः।’ अर्थात् जिसे आर्यजन कहें कि अमुक कार्य करना प्रशंसनीय है, वही धर्म है। मालवीय जी का मन करुणा, दया, संवेदना से परिपूर्ण रहता था। इसीलिए वे ‘महामना’ के रूप में प्रतिष्ठित हुए। धर्मात्मा मालवीय जी हिन्दु विश्वविद्यालय के प्रांगण में भगवान विश्वनाथ का विशाल मन्दिर बनाना चाहते थे। किन्तु साधनों की कमी के कारण यह दर्शनीय मन्दिर बहुत समय तक नहीं बन सका। इसके लिए उन्होंने स्वयं को दोष देते हुए ७५वीं वर्षगांठ के अवसर पर कहा कि ‘कुकुरमुत्ता तो यों ही उग आता है, पर बड़े वृक्ष को बढ़ने में समय लगता है। मैंने मन्दिर के लिए काफी समय नहीं दिया, इसकी मुझे शर्म है, पर अभी मेरा दस वर्ष का कार्यक्रम शेष है, आप विश्वास रखें मैं अभी मरने वाला नहीं हूँ। शरीर छूटने पर भी मैं नहीं मरूँगा, बल्कि विश्वविद्यालय में या यहीं कहीं जन्म लेकर हिन्दू जाति और देश की सेवा करूँगा।’ इस मन्दिर को मालवीय जी ८५ वर्ष की आयु तक बहुत कुछ पूरा कर गये और मरते समय सेठ जुगल किशोर बिड़ला से प्रतिज्ञा कर गये कि वे इसे पूर्ण करा देंगे। बाद में यह भव्य मन्दिर पूर्ण हुआ। मालवीय जी का हिन्दू धर्म के पुनर्जन्म के सिद्धान्त में अटल विश्वास था और वे भविष्यदृष्टा भी थे। वे गीता में बताए हुए कर्म के सिद्धान्तों को पूरी तरह से मानते थे। वे कहते थे कि धर्म और सत्य की पाप और अधर्म पर सदा विजय होती है। वे गीता के इस सिद्धान्तों में विश्वास रखते थे कि रक्षा के लिए परमेश्वर या कोई महान पुण्यात्मा इस संसार में जन्म लेती है—‘यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारतः सम्भावामि युगे-युगे।’

मालवीय जी लोकमान्य तिलक, विवेकानन्द तथा अरविन्द घोष की तरह हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता को स्वीकार करते थे। उनके आचार-विचार सनातन धर्म के नियमों से आबद्ध थे। वे विदेश यात्रा के समय गंगा जल और गंगा की रेत अपने साथ ले गये और विदेश में निरन्तर उन्हीं का उपयोग किया। इसके बाद भी जब महात्मा गाँधी ने अछूतोंद्वारा का आन्दोलन चलाया तो मालवीय जी शूद्रों को मंत्र दीक्षा देने में सबसे आगे थे। उन्होंने इसके लिए विरोध करने वाले पंडितों को अपने विनम्र पाण्डित्य से अपने पक्ष में कर लिया। इसके बाद उन्होंने स्वयं काशी में गंगा तट पर चारों वर्णों के लोगों, यहाँ तक कि चाण्डालों को भी ‘ॐ नमो नारायणः’, ‘ॐ नमो भगवते वासुदेवाय’ आदि मन्त्रों की दीक्षा दी। उनके द्वारा नासिक और कलकत्ते में भी हरिजनों के लिए दीक्षा समारोह आयोजित किये गये। मालवीय जी **शेष पृष्ठ 11 पर**

कबिरा खड़ा बजार में

मूल लक्ष्यों में असफल नोटबंदी



विमुद्रीकरण की घोषणा के ठीक एक साल बाद, यह पूरी तरह स्पष्ट है कि यह कदम विशुद्ध रूप से एक राजनीतिक हथकंडा था। जिसका मकसद प्रधानमंत्री को काला धन से लड़ने वाले एक ऐसे जेहादी अवतार के तौर पर पेश करना था, जो भ्रष्ट अमीरों की जान के पीछे पड़ा है। बहरहाल यदि इस कदम का मूल्यांकन आर्थिक शर्तों के लिहाज से किया जाये, तो कहा जा सकता है कि काला धन के खाले के इरादे से उठा कदम, ऐसा करने में नाकाम रहा। और सबसे बुरा तो यह कि एक कदम, जिसने सभी सामान्य आर्थिक तर्कों की अवज्ञा की। वापस आये ५०० और १००० रुपये के प्रतिबंधित नोटों की ठीक-ठीक संख्या के साथ अभी आरबीआई को सामने आना बाकी है, जैसा कि कहा जा रहा है कि गिनती अभी भी जारी है। कुछ रपटों के मुताबिक निःसंदेह ऐसी पाइप लाइन हैं, जिनमें विमुद्रीकृत धन फंसा हुआ है और इसमें से कुछ धन का आरबीआई में वापस आना है, इन पाइप लाइनों के संग्रह में विमुद्रीकृत करेंसियों में, नेपाल में नागरिकों के पास पड़े प्रतिबंधित नोट, क्योंकि आरबीआई और नेपाल राष्ट्र बैंक ऐसे नोटों के विनिमय को लेकर वार्ता कामयाब नहीं हुई, जिला केंद्रीय सहकारी बैंकों में जमा प्रतिबंधित करेंसी की एक बड़ी राशि छापाई के दौरान आयकर विभाग द्वारा जब्त प्रतिबंधित नोट तथा दंड अथवा जुर्माने के तौर पर अदालतों में जमा धन, शामिल है। सुप्रीम कोर्ट में १५ नवंबर २०१६ को विमुद्रीकरण के निर्णय के बचाव में, तत्कालीन महाधिवक्ता ने दलील दी थी कि सरकार का अनुमान १५ से १६ लाख करोड़ रुपये के कालाधन होने का है तथा १० से ११ लाख करोड़ रुपये लोगों द्वारा बैंकों में जमा करने की अपेक्षा है। उन्होंने कहा शेष ४.५ लाख करोड़ रुपये भारत में गड़बड़ी भड़काने में जम्मू और कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व में इस्तेमाल किये जा रहे हैं, जो निष्क्रिय हो जायेंगे। विमुद्रीकरण के समर्थकों के लिए यह अपेक्षा सही थी, लेकिन काला धन को समाप्त करने का मकसद पूरी तरह नाकाम रहा। इस तरह स्पष्टतः विमुद्रीकरण का पहला लक्ष्य ही हासिल नहीं हुआ। सुप्रीम कोर्ट में सरकार द्वारा पेश हलफनामे में भारतीय अर्थव्यवस्था में लगभग ४०० करोड़ रुपये की नकली करेंसी के प्रसार का अनुमान व्यक्त किया गया था। यह अनुमान भारतीय सांख्यिकी संस्थान द्वारा २०१६ में किये एक अध्ययन पर आधारित था। आरबीआई की सालाना रिपोर्ट बताती है कि मार्च २०१७ तक कुल ४१.५ करोड़ रुपये के ५०० और १००० के जाली नोटों का पता चला है, जो २०१४-२०१५ के लिए आइएसआई के अनुमान का महज दसवां भाग है, विमुद्रीकरण के बाद बैंकों में लौटे १५.२८ लाख करोड़ रुपये का ०.००३ प्रतिशत ठहरता है। यानी ४१.५ करोड़ रुपये की जाली नोटों को निष्क्रिय करने के लिए देश की ८४ प्रतिशत करेंसी को रद्द करना किसी आर्थिक समझ वाला तर्क नहीं दिखता। अतः विमुद्रीकरण का दूसरा लक्ष्य भी हवा में विलीन हो गया। भारत में आतंकवाद से जुड़ी कुल मौतों पर एक नजर डालें तो २०१५ में ७२२ मौतें हुई थीं, जो २०१६ में बढ़कर ८६८ हो गयीं। वहीं अक्तूबर २०१७ तक ६५४ मौतों का आंकड़ा आ चुका है। इन आंकड़ों को देखते हुए भी यदि कोई कहे कि विमुद्रीकरण से आतंकवाद पर रोक लगी है, तो आंकड़ों की समझ पर तरस खाया जा सकता है। यह तीसरा लक्ष्य भी औंधे मुंह गिरा दिखता है। यदि डिजिटलीकरण, कर आधार का विस्तार, कैशलेस इकोनमी के प्रोत्साहन पर गौर करें, तो ये महज उत्तर विचार हैं। ये तब सामने आये, जब यह स्पष्ट हो गया कि नोटबंदी से कोई भी लक्ष्य हासिल नहीं होने जा रहा है। यह कहना जल्दबाजी होगी कि सरकार ने कुछ राजनीतिक लाभ पाने हेतु आर्थिक मोर्चे पर अपने पैर में कुल्हाड़ी मारी है, लेकिन निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भ्रष्टाचार, काला धन, नकली करेंसी तथा आतंकवाद को उखाड़ फेंकने के मूल लक्ष्यों के लिहाज से यह विघटनकारी आर्थिक नीति औंधे मुंह गिरी है।

वीरेश त्यागी

E-mail : viresh.tyagi@akhilbharathindumahasabha.org

